॥ ओ३म् ॥

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

वेद प्रतिपादित मानवीय मूल्यों को
जन-जन तक पहुँचाने हेतु कार्यतत्पर
सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का
मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

वर्ष १४, अंक ६, १० जून २०१४

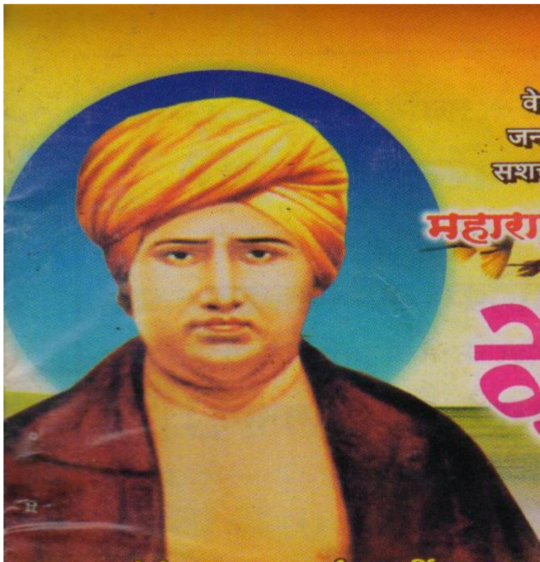

वेदोद्धारक, युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द

हैदराबाद स्वतन्त्रता संग्राम के युवा बलिदानी

हुतात्मा धर्मप्रकाशजी आर्य

जन्म-१९१७ ✿ बलिदान -२७ जून १९३८

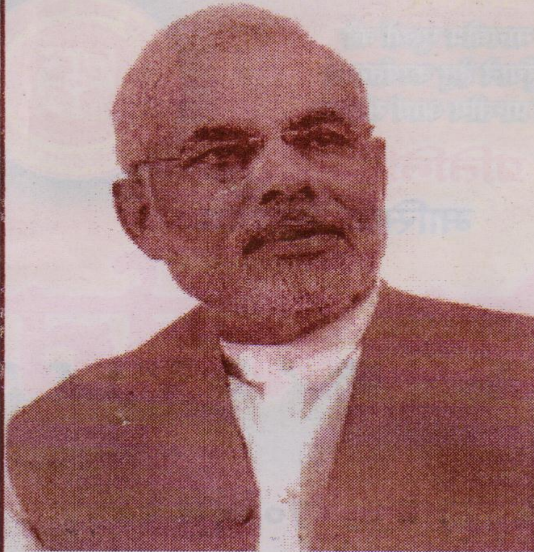

भारत वर्ष के नवनिर्वाचित प्रधानमंत्री

श्री नरेंन्द्रजी मोदी

का आर्य जगत् की ओर से

हार्दिक अभिनन्दन

एवं देश के नवनिर्माण कार्य हेतु

भूयोभूयः शुभकामनाएं !

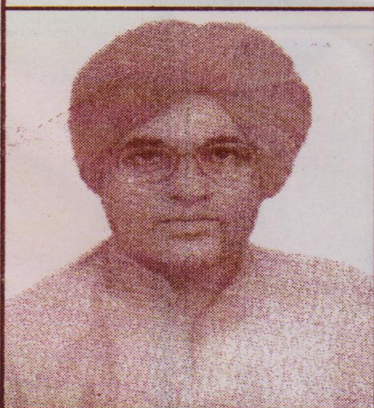

१६ वे लोकसभा चुनाव
में नवनिर्वाचित सांसद
आर्यजगत् के गौरव
श्री स्वामी सुमेधानन्दजी सरस्वती एवं
डॉ.श्री सत्यपालसिंहजी
का आर्यजगत् की ओर से
हार्दिक अभिनन्दन !

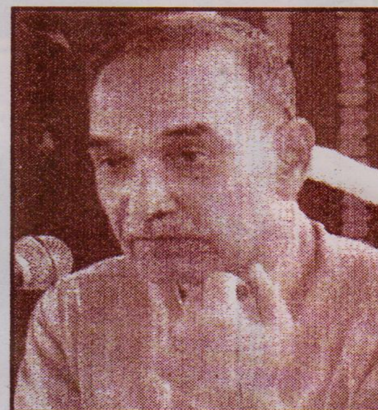

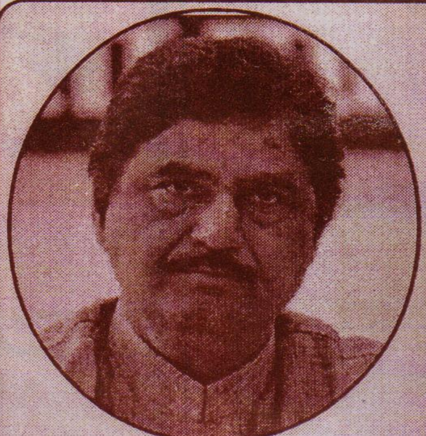

बीड लोकसभा क्षेत्र से नवनिर्वाचित सांसद
एवं देश के नूतन केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्री
मा.श्री गोपीनाथरावजी मुंडे
के आकस्मिक निधन पर उन्हें
भावपूर्ण श्रद्धांजलि !
दिवंगत आत्मा की शांति व सद्गति हेतु प्रार्थना !

विदित हो कि दिवंगत श्री मुंडे परली के निवासी हैं । उनके पार्थिव शरीर पर वैदिक पद्धति से अन्तिम संस्कार किये गये । प्रान्तीय सभा, आर्य समाज परली व स्वामी श्रद्धानन्द गुरूकुल आश्रम के पदाधिकारियों, विद्वानों व मुनिजनों के निर्देशन में यह अन्तेष्टिकर्म सम्पन्न हुआ ।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का

मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,११५ | कलि संवत् ५११५ | विक्रम संवत् २०७१

दयानन्दाब्द १९० | ज्येष्ठ | १० जून २०१४

प्रधान सम्पादक
राजेंन्द्र दिवे
(मो.०९८२२३६५२७२)

सम्पादक
प्रा.डॉ.नयनकुमार आचार्य
(मो.०९४२०३३०१७८)

सहसम्पादक- डॉ. ब्रह्ममुनि वानप्रस्थ (मो. ०९४२१९५१९०४), प्रो. देवदत्त तुंगार (मो.०९३७२५४१०७७)
प्रा. सत्यकाम पाठक, ज्ञानकुमार आर्य

अनुक्रम

हिन्दी विभाग

१) भारतवर्ष के 'नरेन्द्र' (सम्पादकीय)....४
२) आर्य क्रान्तिकारी हुतात्मा धर्मप्रकाशजी....५
३) आर्य समाजियो ! सावधान !....९
४) भ्रष्टाचार और उसकी सीमायें....११
५) महाराष्ट्र आर्य प्र. सभा के उपक्रम....१८

मराठी विभाग

१) उपनिषद संदेश/ दयानंदांची अमृतवाणी....१५
२) यज्ञाचा आत्मा-'दान'....१६
३) गाथा वाचू दयानंदाची....२२
४) आर्य स्वा.सै.श्री मारूतीराव सुरावार....२४
५) संस्कार शिबिर वार्ता....२५
६) अभिनंदन वार्ता....२७
७) वेदप्रचार वार्ता....२९
८) शोकवार्ता....३२
९) म. दयानंद-मराठी कॉमिक्स....३३

● प्रकाशक ●
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
सम्पर्क कार्यालय-आर्य समाज
परली-वैजनाथ ४३१५१५

● मुद्रक ●
वैदिक प्रिन्टर्स
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा
आर्य समाज, परली-वै.

-वैदिक गर्जना के शुल्क-
वार्षिक - रू. ५०/-
आजीवन रू. ५००/-

इस मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मण्डल सहमत हो, यह अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र परली-वैजनाथ जि.बीड ही होना

सम्पादकीयम् भारतवर्ष के 'नरेन्द्र' श्री मोदीजी !

परिवर्तनशील इस संसार में बुराइयां जादा दिनों तक टिक नहीं सकती। अच्छाई के दिन आते ही हैं। घने अन्धेरे के बाद प्रकाश की किरणें फैलने में देर नहीं लगती। आजादी के ६६ वर्षो में देश ने कुछ पाने के बजाय खोया ही जादा है। देश का माहौल विचित्र सा बन रहा था। देश भ्रष्टाचार, सांप्रदायिकता, अनैतिकता के दौर से गुजर रहा था। जनता त्रस्त थीं। ऐसे में देश को श्री नरेन्द्र मोदी जी के रूप सर्वगुणसम्पन्न नेता मिलें, यह हमारा सद्भाग्य ! महर्षि स्वामी दयानन्द भी कहते हैं - 'परमात्मा की सृष्टि में अभिमानी, अन्यायकारी, अविद्वान् लोगो का राज्य बहुत दिन नहीं चलता।' भारतवासी एक ऐसे समर्थ पर्यायी नेतृत्व की प्रतीक्षा में थे, जो उनकी आन्तरिक भावनाओं को समझ सके। इस दृष्टि से नये प्रधानमन्त्री श्री मोदीजी इस समय देश के लिए तारणहार बन चुके हैं। लोकसभा चुनावों में पार्टी से भी जादा उनके अकेले के प्रभावशाली व्यक्तित्व ने जनता पर रंग जमाया। उनकी प्रखर राष्ट्रभक्ति, देशाभिमान, मातृसंस्कृति के प्रति अपार श्रद्धा व निष्ठा, राष्ट्रीय सर्वांगिण उन्नयन के प्रति कृतिशील आत्मविश्वास, राष्ट्र के लिए कुछ कर गुजरने की दृढ आकांक्षा, सदैव सकारात्मक दृष्टिकोन तथा प्रचण्ड धैर्यसामर्थ्य आदि गुणों के कारण देश में परिवर्तन की धारा बही। अब निश्चय ही देश का सही अर्थो में विकास होनें में मदद मिलेगीं। उनके कार्यों से अन्य देश व चीन, अमेरिका जैसे शक्तिशाली राष्ट्र भी प्रभावित होंगें। अब मानवता की बात करनेवाले, वैदिक विचारों को माननेवाले तथा सत्य का समर्थन करनेवाले लोगों को प्रेरणा मिलेंगी। मोदीजी जिस गुजरात प्रान्त में जन्में, वह वेदोध्दारक महर्षि दयानन्द की भी जन्मभूमि है। हमें विश्वास है कि महर्षि की पावन वैदिक विचारधारा को प्रसारित करने में श्री मोदीजी व उनकी सरकार अवश्य सहाय्यक सिद्ध होगी। आनेवाला नया युग वेदाधारित मानवीय मूल्यों को बढानेवाला हो और इस कार्य में श्री मोदीजी आर्यों के सन्मित्र बनेगें, यही आकांक्षा ! उन्हें हमारी शुभकामनाएं !

– बलिदान दिवस (२७ जून) पर विशेष–

आर्य क्रान्तिकारी 'हुतात्मा धर्मप्रकाशजी'

–प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

वीर धर्मप्रकाश का जन्म कभी चालुक्यवंश की राजधानी होने का गौरव रखनेवाले बस्वकल्याण (कर्नाटक) कस्बा में हुआ । आर्य समाज में प्रविष्ट होने से पूर्व आपका नाम **नागप्पा** था । आपके पिताजी का नाम **श्री सायबण्णा** था । बस्वकल्याण अब तो कर्नाटक राज्य में है, पहले निजाम राज्य का एक तालुका था। बस्वकल्याण के हिन्दुओं को भी निजाम राज्य की शेष हिन्दू प्रजा के समान अन्याय व अत्याचारों की चक्की में पिसना पडता था । न धार्मिक स्वतन्त्रता थी और न नागरिक अधिकार ही प्राप्त थे ।

धर्मप्रकाश एक फुर्तीला, तेजस्वी, साहसी व स्वाभिमानी युवक था । सत्यार्थप्रकाश के पाठ व ऋषि दयानन्द के जीवन-चरित्र का स्वाध्याय करने से उसके जीवन में एक अद्भूत परिवर्तन आया । ऋषि दयानन्द द्वारा मनुष्य की परिभाषा उसने पढी और उसे जीवन में उतारने का पूरा प्रयास किया । धर्मप्रकाशजी की व्यायाम में पहले से ही विशेष रूचि थी ।

आर्य समाज में प्रविष्ट होकर उसने आर्यसमाज में व्यायामशाला का कार्य सम्भाला । उसने युवकों को खींचा । संघठित किया और उन्हें आर्य समाज में व्यायाम सिखाने लगा । धर्मप्रकाश की धर्म धुन, श्रेष्ठ जीवन व सेवा भाव आदि गुणों के कारण अनेक युवक वैदिक धर्मी बन गये । वह लाठी चलाने में दूर-दूर तक प्रसिद्धि प्राप्त था । निजामशाही को आर्यसमाज और धर्मप्रकाश की बढती हुई लोकप्रियता फुटी आँख से भी नहीं भाती थी । दबी कुचली हिन्दू प्रजा में चेतना का संचार होता देखकर बस्वकल्याण के अधिकारी व मुस्लिम संस्थायें आर्यों का दमन दलन करने के लिये पहले ही कोई न होई षडयंत्र रचती रहती थी । अब वे सब मिलकर आर्य समाज के इस उदीयमान नवयुवक धर्मप्रकाश को किसी प्रकार से समाप्त करने पर तुले हुए थे । उन दिनों सारे राज्य में सरकारी संरक्षण से छपनेवाले मुस्लिम पत्र-पत्रिकायें व मुल्ला मौलवी दिन-रात प्रचार ही घृणा, द्वेष व हिंसा का किया करते थे । ७ जुलाई सन् १९३८ के अखबार हैदराबाद में एक मौलना हजरत अलहाज मौलवी सैय्यद वली अल्ला हुसैनी के मस्जिद में दिये गये भाषण की रिपोर्ट छपी मिलती है ।

उसमें उसने मुसलमानों से कहा- **मस्जिद ही वह स्थान है, जहां कजा (मौत) के, कारोबार, माल सम्पदा के बटवारे के निर्णय, हत्या के आदेश पुलिस के संगठन की व्यवस्था हुआ करती थी ।**

ऐसे-ऐसे सुन्दर धर्मोपदेश जहाँ दिये जाये, वहाँ निर्दोषों की हत्यायें क्यों न हों ? वेदप्रकाश, धर्मप्रकाश, शिवचन्द्र व भाई श्यामलाल की हत्यायें इसी शिक्षा का परिणाम थीं ।

क्रूरतापूर्ण हत्या की यह घटना

अकरम अली खॉ तालुकादार और मुहम्मद इस्माईल नाम के वकील ने षडयंत्र रचकर लगभग पचास मुस्लिम गुण्डों को उकसाकर धर्मप्रकाशजी पर आक्रमण करवाया । वें आठ बजे रात्रि आर्यसमाज से व्यायामशाला का कार्य करके अपने घर को लौट रहे थे । उनका एक अन्य मित्र भी समाज से साथ चला था । उसे उन्होंने भेज दिया । अकेले निहत्थे धर्मप्रकाश पर दुष्ट दैत्य जो शस्त्रों से सुसज्जित थे, टूट पडे । वीर ने जितना भी सम्भव था, एक लाठी से उनके प्रहार और वार रोके । एक-एक को सामने आकर लडने के लिये ललकारा । कायरों में से किसी एक को भी वीर के सामने आने की हिम्मत न हुई । अंधेरे में शूर की पीठ पर बर्छी, भाले, तलवार आदि से वार करते रहे । किसी ने तब लिखा था -**जनानों की छुरी भी हो न ऐसे खून की प्यासी**

धर्मप्रकाश का दोष क्या था ?

उसका दोष बस यही था कि वह मुसलमान नहीं था । न वह मुसलमान बनने को तैय्यार था । उसे बदमाशों ने मारते हुए खाकसार पार्टी का सालार बनाने का भी प्रलोभन दिया था । अंजमने इत्तहाद उलमुस्लमीन का कार्यकर्त्ता मिस्टर इस्माईल ही इस हत्या का प्रेरक था । यह प्राणघातक आक्रमण इसी वकील के घर से थोडा आगे निकल जाने पर ही हुआ । जब वार पर वार करते हुए उसे कहा जाता रहा कि- **अब भी बच सकते हो । मुसलमान बन जाओ ।** तब गर्जना करते हुए उस वीर ने कहा- **आर्य समाज में प्रविष्ट हुआ, तभी से मैने यही सीखा हैं -**

सिर जावे तो जावे,
मेरा सच्चा धर्म न जावे ।

उसने आवाज दी कि **'कोई हिन्दू हो, तो आ जाओ । मैं नागप्पा हूँ । खाकसार पार्टीवाले मुझे मार रहे हैं ।'**

उस क्षेत्र में कन्नड भाषा में धर्म पर प्राण देनेवाले धर्मप्रकाश पर पोवाडे (लोक गीत) लिखे गये । इन गीतों को धर्मप्रेमी बडे जोश व श्रद्धा से आज पर्यंत गाते हैं । हमने वीरवर पर आक्रमण का यह वृत्तान्त **वैदिक सन्देश**

(हिन्दी सोलापुर) **झण्डा** (मुम्बई) व लाहौर के **आर्यवीर** साप्ताहिक के सम्पादक पं. श्री मेहरचन्द्रजी शर्मा के सम्पादकीय के आधार पर लिखा है। झण्डा के सम्पादक शिवाय भाग्यनगरी जी थे। हत्यारों पर अभियोग तो चला, परन्तु जैसा कि **वैदिक सन्देश** के सम्पादक श्री रामदेवजी शास्त्री ने लिखा था - **न्याय का नाटक करके दोषियों को दोषमुक्त कर दिया गया।** अमर पद को प्राप्त करते समय इस आर्य वीर की आयु केवल २१ वर्ष की थी। धर्मप्रकाश ने बलिदान देकर राज्य के आर्यों में नवजीवन का संचार कर दिया। छोटे बडे सब आर्यों में अपने धार्मिक अधिकारों की रक्षा के लिए धर्म की वेदी पर शीश चढाने की एक होड सी लग गई। जहाँ वेदप्रकाश, शिवचन्द्र, महादेव ने प्राणों की आहुति दी, वहीं पर निजाम राज्य के आर्यो के गौरव भाई श्री श्यामलालजी वकील ने भी बीदर जेल में पापियों के हाथों से विषपान करके इस रक्तरंजित इतिहास में एक और स्वर्णिम अध्याय जोड दिया।

शवयात्रा का दृश्य

इन पंक्तियों के लेखक ने स्वयं बस्वकल्याण जाकर उस समय के सज्जनों से भेंट करके वीरवर के जीवन व बलिदान की घटना से सम्बन्धित सामग्री एकत्र की। तथापि यहाँ हम तत्कालीन पत्रों के आधार पर ही हुतात्मा की शवयात्रा का प्रामाणिक वृत्तान्त प्रस्तुत करना अधिक उचित समझते हैं। मुम्बई से प्रकाशित होनेवाले **झण्डा** पत्र में हम पढते हैं -

२७ जून सोमवार के आठ बजे भाई धर्मप्रकाश के वध का समाचार सुनकर साठे आठ बजे मोहनसिंहजी मन्त्री आर्यसमाज बस्वकल्याण तथा अन्य आर्य लोग युद्ध स्थल पर गये। मोहतम्मिम साहेब पुलिस व तालुकादार को सूचना दी गई। उक्त महोदय आकर बोले- अरे यह तो पानी है रक्त नहीं।

एक उत्साही कार्यकर्ता बाबूप्रसाद ने कहा कि अच्छी प्रकार से देखा जाय साहेब ! लहू को पानी कैसे बतला रहे हो ? अन्ततः पंचनामा हुआ। दूसरे दिन प्रातः शव का हस्पताल मे पोस्ट मार्टम हुआ। **डाक्टर महोदय ने बतलाया कि सोलह वार हुतात्मा की पीठ पर किये गये हैं तथा लाठी, बर्छी, तलवार और भाला चार प्रकार के शस्त्रों का प्रयोग किया गया है।** विशेष प्रहार भाले के हैं। वहाँ से हुतात्मा के शव को समाज मन्दिर में लाया गया। उसी समय श्यामलालजी वकील उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा

निजाम राज्य का पत्र प्राप्त हुआ कि मै बुद्धवार को चार बजे आ रहा हूँ। तब हुतात्मा का दाहकर्म संस्कार न किया जाय। मंगलवार को मोहतमिम साहेब गुलबर्गा से पुलिस को साथ लेकर आये। आते ही धारा १४४ लगा दी।

हिन्दुओं को रोका गया

हुतात्मा की अर्थी के जलूस में सम्मिलित होने के लिए बाहर से आनेवाले हिन्दुओं को रोका जाता था। शस्त्र छीने जाते थे। परन्तु उसी दिन हुमनाबाद आदि स्थानों से मुसलमानों की सशस्त्र टोलियाँ आने लगीं। उनसे शस्त्र नहीं छीने गये। वे सारी टोलियाँ छुपकर बैठी रहीं। यदि आयोग द्वारा जाँच हो, तो इस षडयन्त्र का भाण्डा फूट जाये।

शीघ्र दाहकर्म करो !

बुधवार को प्रातःकाल के समय मोहतमिम साहेब ने आर्य समाज के मन्त्रीजी को आर्डर दिया कि 'मृतक को अतिशीघ्र जला दो।' उन्हें बार-बार कहा गया कि हमारे नेता आनेवाले हैं। उनके आने तक हम इसे जलाना नहीं चाहते ! परन्तु उसने कहां- इसे शीघ्र उठाओ, अन्यथा अपने व्यक्ति लगाकर अथवा पुलिस द्वारा इसे कब्र में फेंकवा देता हूँ। अन्ततः विवश होकर ग्यारह बजे शव को स्नान करवाकर शोभा यात्रा निकाल कर श्मशान भूमि में ले जाया गया। शोभा यात्रा को बडे-बडे मार्गो से नही ले जाने दिया गया। अर्थी को तंग गलियों से ले जाने की आज्ञा दी गई। मोहतमिम साहेब सबको गालियाँ देते जाते थे और डाँटते जाते थे कि **शीघ्रता करो !** भजन गाने वालों को मोहतमिम साहेब गालियों व धक्कों का प्रसाद देते जाते थे। श्मशानभूमि में शव चार बजे पहुँचाया गया। पूर्ण वैदिक रीति से अन्त्येष्टि संस्कार किया गया। वीरवर की शवयात्रा में लगभग चार सौ स्त्रियाँ व पाँच सहस्त्र पुरूष थे। (बस्वकल्याण आज भी कोई बडा नगर नहीं है, बल्कि तालुका हैं। तब तो और भी छोटा कस्बा था) इतने लोगों का शवयात्रा में भाग लेना उनके धर्मप्रेम व उत्साह को दर्शाता है। स्थान स्थान पर पुष्प वर्षा होती गई। सायंकाल पं. श्यामलालजी वकील व पं. गणपतिजी शास्त्री भी आ गये।

-वेदसदन, अबोहर (पंजाब)

('रक्तरंजित है कहानी' से साभार)

हुतात्मा धर्मप्रकाशजी का बलिदान समारोह आगामी दि. २७ जून २०१४ को आर्य समाज बस्वकल्याण में उत्साहपूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर यज्ञ, भजन, शोभायात्रा तथा व्याख्यान आदि कार्यक्रम होंगें। अतः आप सभी आमंत्रित हैं।

- मन्त्री, आर्य समाज, बस्वकल्याण।

आर्य समाजियों ! सावधान !

– अजितकुमार सरसम्बे

अब तक परायोंद्वारा वैदिक धर्म पर हमला होता रहा है, अब अपनों का सामना करने के लिए तैयार हो जाओ ! ३ अप्रैल से ९ अप्रैल २०१४ का **वैदिक सार्वदेशिक** का अंक पढिये और देखिये मुखपृष्ठपर क्या लिखा है ? आस्तिन का सांप फन निकालकर फुत्कार रहा है। स्वामी दयानंद, पं. लेखराम व स्वामी श्रद्धानंद जैसे त्यागी, बलिदानी और समाज सुधारकों की पीठ में छुरा घोंपने का कार्य फिर से हो रहा है। आर्य समाज का लेबल लगाकर **आर्य समाज** पर ही कुठाराघात किया जा रहा है।

कुछ वर्ष पहले परोपकारी पत्रिका में किसी के एक प्रश्न (एक शंका) का प्रकाशन हुआ था। जिसमें प्रश्न पूछा गया था कि 'क्या मुसलमान मुसलमान होते हुओ, ईसाई ईसाई होते हुओ और अन्य धर्मावलंबी अपने धर्म में रहते हुये, आर्य समाजी नहीं बन सकते ? पता नहीं मेरी अल्प बुद्धि के अनुसार परोपकारी को मैंने इस प्रश्न के उत्तर रूप में एक पत्र लिखा था। जिसमें मैंने कहा था कि आर्य समाज में मुसलमान, ईसाई, मराठा, ब्राह्मण, लिंगायत, बौद्ध, जैन आदि भिन्न नामों से कोई आर्य समाज का सदस्य नहीं बन सकता। आर्य समाज में आर्य समाजी और केवल आर्य समाजी, जो वैदिक सिद्धान्तों व विचारों मे श्रद्धा रखता हो, सदस्य बन सकता है। मेरा पत्र छपा या नहीं, पता नही।

अब फिर से स्वामी अग्निवेश ने फतवा जारी किया है कि मुसलमान, ईसाई आदि मतावलंबियो को शुद्धि और नाम बदलने की आवश्यकता नहीं है। अपने मूल नाम के साथ ही वे आर्य समाज का फार्म भरकर पांच रूपये में आर्य समाज की सदस्यता ग्रहण कर सकता है।

इस संबंध में अनेक गंभीर प्रश्न उपस्थित हो सकते हैं। एक प्रश्न - 'क्या मतावलंबियों में भी ऐसा ही होता है ? क्या इस्लाम धर्म स्वीकार करने पर नाम नही बदला जाता ? क्या ईसाई धर्म स्वीकार करने पर उनके नाम के साथ कोई ईसाई धर्म का लेबल नहीं लगाया जाता ? क्या उनके लिए चर्च में जाकर प्रार्थना करना और बाईबल का पाठ करना आवश्यक नहीं हैं ?

फिर आर्य समाज में अपने ही तथाकथित, स्वघोषित नेताओं द्वारा आर्य समाज के नीतिनियमों व सिद्धान्तों के

विरूद्ध समीक्षा और संशोधन तक का फतवा किस अधिकार से दिया जा रहा है ? क्या यह आर्य समाज के साथ द्रोह नहीं हैं ? क्या यह घुसपैठियों को आर्य समाज में लाकर आर्य समाज को जडमुल से उखाड फेंकने का षडयंत्र नहीं हैं ? दुःख की बात है कि इसमें विचारवान और विद्वान भी ऐसे षडयंत्र - कारियों का साथ दे रहे हैं ।

यदि ऐसा कुछ हुआ (निकट भविष्य में संभव नहीं) तो इसके गंभीर और दूरगामी परिणाम होंगे, इसमें कोई शंका नहीं है । इसका सामना करने के लिए आर्य समाजों को कमर कस कर तैयार रहना चाहिये । घर का भेदी ही लंका ढहाने का षडयंत्र रच रहा है । अतः आर्यों ! समय रहते, समय की मांग को ध्यान में रखकर, सावधान व सचेत होना चाहिये । सावधान व सचेत हो जाओ !

– आर्य समाज, दयानन्द मार्ग
उदगीर जि.लातूर

।। ओ३म् ।।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभातंर्गत
आर्य समाज परली द्वारा संचालित

श्रद्धानन्द गुरूकुल महाविद्यालय, परली- वै.

प्रवेश सूचना

आप सभी को सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभांतर्गत आर्य समाज परली द्वारा संचालित **'स्वामी श्रद्धानन्द गुरूकुल महाविद्यालय'** में दि.१५ जून २०१३ से पांचवी कक्षा में उत्तीर्ण छात्रों को छठी कक्षा में प्रवेश दिये जा रहे हैं। परली शहर के वैद्यनाथ मंदिर से २ कि. मी. दूरी पर सुरम्य पर्वतीय प्रदेश में विद्यमान इस शिक्षास्थली में महर्षि दयानन्द आर्ष विद्यापीठ, झज्जर (रोहतक) से संलग्न आर्ष पाठ्यक्रम चलाया जाता है, जिसमें वेद, व्याकरण, संस्कृत साहित्य के साथ ही अंग्रेजी, हिन्दी, मराठी, गणित, विज्ञान आदि विषयों का तज्ज्ञ अध्यापकों के सान्निध्य में अध्यापन होता है। गरीब, अनाथ व होनहार छात्रों को निःशुल्क प्रवेश दिया जाएगा।

अतः अपने बच्चों को सुसंकारित कराने व वेदानुयायी बनाने हेतु प्रवेश दिलावें।

सम्पर्क- आचार्य प्रवीण(८८५५०८०६३२),
विज्ञानमुनि(९९७५३७५७११),डॉ.ब्रह्ममुनि (९४२१९५१९०४)

भ्रष्टाचार और उसकी सीमायें

–डॉ.ब्रह्ममुनि वानप्रस्थ

आजकल जिधर देखो उधर भ्रष्टाचार और घोटालों की चर्चा है। चारा घोटाला, कॉमनवेल्थ खेल घोटाला, आदर्श घोटाला, टू जी स्पेक्ट्रम घोटाला, कोयला घोटाला इत्यादि अनेकों घोटालो की यह श्रृंखला कहीं थमने का नाम ही ले रही है। आज देश के हर क्षेत्र में भ्रष्टाचार और घोटालों ने अपने पैर जमा दिये हैं। भारतीयों की खून पसीने की कमाई घूसखोरों और उन्हें पनाह देनेवाले चंद भ्रष्टाचारियों के माध्यम से काले धन के रूप में विदेशों में जमी पडी है।

इस भ्रष्टाचार के विरोध में अनेक लोग अपनी-अपनी तरह से लडाई लड रहे हैं। कइयों ने अनशन के द्वारा सरकार को कानून बनाने और कार्यवाही करने पर मजबूर किया है। बिमारी क्या है, क्यों है, कौनसी अवस्था में है, निदान कैसे होगा ? फिर उसका इलाज कैसे करना होगा ? यह सब देखे बिना ही उसको मिटाने की कोशीश की जा रही है, जो यशस्वी तथा फलदायी होती नहीं दिख रही। सरकार के विरोध में एक-एक समस्या को लेकर आंदोलन करने के पीछे तीन प्रयोजन छिपे हो सकते है।

१) राजनेता इन आंदोलनों को स्टंट बनाकर सरकार गिराने तथा अपना पक्ष (पार्टी) कैसे आगे हो ? इसके लिए प्रयास करते है। इसमें ईमानदारी नही होती, जो कि होनी चाहिए।

२) सामाजिक धार्मिक लोग ईमानदारी से जनकल्याण के लिए सरकारी नीतियों को ठीक (दुरूस्त) करना चाहते है।

३) कुछ लोग स्वयं की प्रसिद्धी के लिए आंदोलन छेडते हैं। उसमें उनका हेतु स्वयं को हीरो बनाना होता है।

ईमानदारी की बात ये है कि इस समस्या को लेकर समाज में जितने भी आंदोलन हुए, जितनी भी क्रांतियां हुई, वे सभी विफल हो गई हैं। क्यों कि समस्या का उत्तर झटपट नहीं हुआ करता ! समस्या के मूल कारण का निवारण हुए बगैर समस्या का हल हो ही नहीं सकता।

किसी भी समस्या के निर्माण में मनुष्य ही कारण है। मनुष्य का अज्ञान, अविवेक और बेईमानी ही समस्या के मूल में कारण हैं। फिर यदि समस्या का निराकरण करना हो, तो मनुष्य का सत्यज्ञान, विवेक और ईमानदारी ही तो काम आयेगी। अब भ्रष्टाचार रूपी बिमारी का इलाज करना हो, तो कारण को दूर कर निराकरण के उपयों को बढावा देना

चाहिए। अब सवाल यह उठता है कि इसको कौन करेगा ? प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं ही यह करना पडेगा। सरकार या कानून यह नहीं कर सकते। उसके लिये विवेक जागृत होना चाहिये, यही तो बडी मुश्किल बात है। माया, मोह, लालच, ईर्ष्या, द्वेष,आलस्य, प्रमाद तथा एषणाओं से विवेक नष्ट हुआ करता है। क्या इन्हें भी सरकारें या राजकीय पक्ष बचा सकते हैं ? आज मिडीया में भी भ्रष्टाचार की खूब चर्चा होती है, परंतु इसके निराकरण का सही उपाय वह भी नहीं बता रहा है।

शुचिता-भ्रष्टाचार, निःस्वार्थता-स्वार्थ, ईमानदारी-बेईमानी इत्यादि सभी बातें प्रवृत्तियों से संबंधित है। प्रवृत्ति को देश, काल, जाति-पंथ आदि लेबल नहीं हैं, वे तो केवल अच्छी या बुरी हो सकती हैं। ये दो प्रवृत्तियाँ मनुष्य के साथ जन्म से लेकर मृत्युपर्यंत या यूं कहे जन्मजन्मांतर के साथ ही है। यह एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। इसे बदला नहीं जा सकता। किस प्रवृत्ति को दबाना, किसको बढावा देना ? यह प्रत्येक का अपना-अपना काम है। यह काम सरकार, पक्ष-पार्टीयों या समाजसुधारकों का नहीं अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति ने चाहा तो ही प्रवृत्ति पर काबू पाया जा सकता है। कोई अन्य व्यक्ति इसमें क्या कर सकेगा ? विवेकजागरण या सत्प्रवृत्ति के उदयन के लिए निम्न बिन्दुओं पर गौर करना जरूरी है -

● मैं कौन हूँ ? मुझे क्या चाहिए ? मेरे साथ क्या आनेवाला है ? मै क्या कर सकता हूँ ? क्या नहीं कर सकता ? आदि के सत्यज्ञान से विवेक जागृत होता है। विद्या और तप से (विद्यातपोभ्यां भूतात्मा।) ही कोई विवेकशील बन सकता है।

● जो लोग अच्छे बनें, विद्वान बनें, विवेकी बनें, श्रेष्ठ बनें, संन्यासी व योगी बनें, उनकी अच्छाई, विद्वत्ता, विवेकशीलता, श्रेष्ठता आदि बातें हर हमेशा के लिए रहेंगी, ऐसी बात नहीं। किसी कारणवश विवेकी लोग भी अविवेकी बनकर गलत काम करके स्वयं का और दूसरों का नुकसान कर सकते हैं। ऐसी स्थिति में कोई सरकार या कानून भला क्या करेगा ?

● सरकार केवल गलतियों वा गुनाहों के लिए कडी सजा देकर गलत प्रवृत्ति को दबा सकती है।

● शासन के साथ-साथ सरकार अनुशासन (शिक्षा) के माध्यम से ईमानदारी,अच्छाई, अच्छी प्रवृत्ति और सत्यज्ञान देकर सत्प्रवृत्ति को बढा सकती है।

● शिक्षा और दंड (न्याय व्यवस्था) ठीक चलेगी, तभी सबका भला का सकता है।

● यह चलनेवाले भी तो मनुष्य ही है, वे ही बिगड गये, तो कैसे होगा ?

● आज मनुष्य स्वयं ही बिगड गया, इसलिए कानून कितने अच्छे क्यों न हो उसका पालन नहीं हो रहा है। कानून हो अथवा न्यायव्यवस्था अच्छी हो, तो भी गुनहगार निर्दोष छूट जाते हैं और यही आज होता हुआ दिखाई दे रहा है।

● दंडव्यवस्था में विद्वान व्यक्ति को सामान्य से अधिक दंड देने का प्रावधान है। क्योंकि ऐसे लोगों की गलतियाँ अनेकों पीढियों को नुकसान पहुंचा सकती है। वे लोग ज्ञान की आचरण और आदर्शों की परंपरा ही बदल देते हैं। इसलिए उनके लिये अधिक दंड की व्यवस्था बना दी गयी, किन्तु दुर्भाग्य से आज ऐसा नहीं हो रहा है। बडे लोग निर्दोष और छोटे लोगों को दंड, ऐसी समाज की स्थिति क्यों बन गयी ? क्योंकि न्याय देनेवाला व्यक्ति बिगडा हुआ है।

उपर्युक्त बिन्दुओं से यह बात स्पष्ट हो जानी चाहिए कि हर जगह जब मनुष्य बिगड चुका है, उसमें ईमानदारी, विवेक, कृतज्ञता, परोपकार की भावना आदि का अभाव है। प्रवृत्ति में गहराई तक दोष छिपे हैं, तो इसका झटपट इलाज कैसे संभव हैं ? लोकपाल विधयेक कितनी ही अच्छी तरीके से बनाओं, उसके सदस्यों में बुराई ने डेरा डाला तो क्या करोगें ? उसका अंजाम कितना भयंकर होगा ? ये बात भ्रष्टाचार तक ही सीमित नहीं है। अन्याय, आत्महत्या, बिमारियाँ, धोखाधडी, विश्वासघात, पर्यावरण समस्या विभिन्न प्रकार के झगडे आदि अनेक समस्यायें हैं, जिनसे हमें छुटकारा पाना है

आज योगगुरूभी योग को भूला रहे हैं। योग ने तो सारी समस्याओं और दुःखों का इलाज चित्तवृत्ति का निरोध बताया है, आत्मा का परमात्मा से जुडना बताया है। परंतु योग के नामपर राजनीति और संकीर्णता ही हावी होती हुई दिखाई दे रही है। महर्षि स्वामी दयानन्द ने दुनिया की सारी समस्याओं का इलाज, वेद तथा आर्ष ग्रन्थों का आधार लेकर बता रखा हैं। उनके अनुसार सत्यज्ञान, तपश्चर्या, विद्या, सत्संग, ज्ञान-कर्म-उपासना का समन्वय, योग के आठों अंगों का अविभाज्य रूप से निरन्तर अनुष्ठान, यही तो संसार के सारे दुःखों और सारी समस्याओं का मूलगामी निवारण उपाय हैं। योग के केवल दो ही अंगों (आसन व प्राणायाम) को लेकर चलना यह उपाय नहीं हो सकता।

(शेष अगले अंक में)

- आर्य समाज
परली-वै. जि.बीड
मो.९४२१९५१९०४

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।।

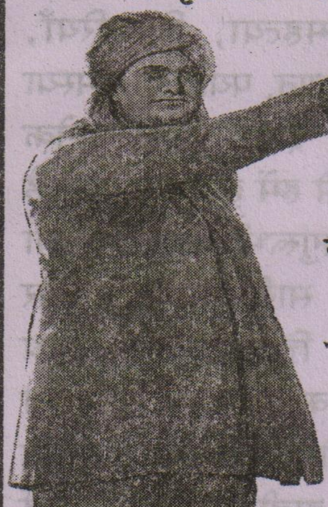

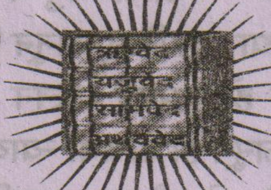

वेदों की ओर लौटो !

वेद प्रतिपादित मानवीय
जीवन मूल्यों को
जन–जन तक पहुँचाने हेतु
कार्यतत्पर सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

(पंजीयन–एच. ३३३/र.नं.६/टी.इ. (७)१६७/१०४९,
स्थापना ५ मार्च १९७७)

– मानवकल्याणकारी उपक्रम –

- 'वैदिक गर्जना' मासिक मुखपत्र
- आर्य समाज दिनदर्शिका
- पू. हरिश्चन्द्र गुरूजी गौरव–'मानवता संस्कार एवं आर्यवीरदल शिविर'
- आर्य कन्या वैदिक संस्कार शिविर
- पातञ्जल ध्यानयोग शिविर
- प्रान्तीय आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर
- पुरोहित प्रशिक्षण शिविर
- मानव जीवनकल्याण वेद प्रचार (श्रावणी) उपाकर्म अभियान
- स्व. विठ्ठलराव बिराजदार स्मृति विद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- सौ. तारादेवी जयनारायणजी मुंदडा विद्यालयीन राज्य.निबंध स्पर्धा
- सौ. कलावतीबाई व श्री मन्मथअप्पा चिल्ले (आनन्दमुनि) महाविद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- विद्यार्थी सहायता योजना
- सौ.डॉ. विमलादेवी व श्री डॉ.सु.ब.काले (ब्रह्ममुनि) महाविद्यालयीन राज्य. निबन्ध स्पर्धा
- स्व.पं. रामस्वरूप लोखण्डे स्मृति संस्कृत राज्य प्रतियोगिताएं
- मानवजीवन निर्माण अभियान – विद्यालय व महाविद्यालयों के लिए (वैदिक व्याख्यानमाला)
- शान्तिदेवी मायर स्मृति मानवनिर्माण एवं सेवा योजना
- स्व. भसीन स्मृति एवं मायर गौरव स्वास्थ्य रक्षा एवं चिकित्सा शिविर
- शान्तिदेवी मायर विधवा सहायता योजना
- वैदिक साहित्य भेट योजना
- पंथ–जातिप्रथा निर्मूलन अभियान
- वैदिक साहित्य प्रकाशन योजना
- आपत्कालीन सहायता योजना
- पर्जन्यवृष्टि यज्ञ अभियान
- गौ–कृषि सेवा योजना
- स्वा.सै.श्री गुलाबचंदजी लदनिया गौरव राज्य योगासन प्रतियोगिता
- सौ.धापादेवी गु. लदनिया गौरव राज्य प्राणायाम प्रतियोगिता

॥ ओ३म् ॥

माझ्या मराठीचा बोलु कवतिके। परि अमृतातेही पैजेसीं जींके ।

ऐसी अक्षरेंचि रसिकें । मेळवीन ॥ (संत ज्ञानेश्वर)

मराठी विभाग

उपनिषद सन्देश

अविद्याग्रस्तांची अवस्था

अविद्यायामन्तरे वर्तमानाः स्वयं धीराः पण्डितम्मन्यमानाः ।

दन्द्रम्यमानाः परियन्ति मूढा अन्धेनैव नीयमाना यथान्धाः ॥

(कठोपनिषद् २/५)

अविद्या व अंधःकारात पडलेले, स्वतःला धैर्यधुरंधर व विद्वान मानणारे तसेच उलट्या दिशेने चालणारे लोक विचित्र प्रकारचे असतात. ज्याप्रमाणे आंधळ्याच्या मागे आंधळे चालतात, त्याचप्रमाणे यांची वाईट स्थिती होते. ही मूढ मंडळी सतत दुःखसागरात रममाण होत आपले जीवन दुःखाने व्यतीत करतात.

दयानंदांची अमृतवाणी

तीन प्रकारचे प्राणायाम व त्यांचे लाभ

एक बाह्यविषय म्हणजे प्राणाला बाहेरच जास्त वेळ रोखून धरणे. दुसरा आभ्यन्तर म्हणजे प्राणाला आतच जितका वेळ रोखून धरता येईल, तितका वेळ रोखून धरणे. तिसरा स्तम्भवृत्ति म्हणजे एकदाच जिथल्या तेथे प्रणाला यथाशक्ती रोखून धरणे. चौथा प्रकार म्हणजे बाह्याभ्यन्तराक्षेपी. यामध्ये प्राण आतून बाहेर जाऊ लागतो, तेव्हा त्याच्या विरूद्ध प्रयत्न करून त्याला बाहेरून आत घ्यावे आणि तो बाहेरून आत येऊ लागताच त्याला आतून धक्का मारून बाहेरच थोपवून धरावयाचे. अशा प्रकारे एकमेकांच्या विरूद्ध क्रिया केल्यास श्वास व उच्छ्वास यांची गती थांबून प्राण आपल्या ताब्यात राहतो. त्यायोगे मन व इंद्रिये ही आपल्या ताब्यात राहतात. बळ व पुरूषार्थ वाढून बुद्धी तीव्र व सूक्ष्मरूप बनते आणि ती अत्यंत अवघड व सूक्ष्म विषयही चटकण ग्रहण करते. त्यायोगे माणसाच्या शरीरातील वीर्य वाढते आणि त्याला स्थिर बळ, पराक्रम व जितेंद्रियता प्राप्त होऊन तो थोड्याच काळात सर्व शास्त्रांमध्ये प्रवीण होतो. अशाच प्रकारे स्त्रीनेही अभ्यास करावा.

(सत्यार्थ प्रकाश-तिसरा समुल्लास)

यज्ञाचा आत्मा - 'दान'

-ज्ञानकुमार आर्य

जनक राजाच्या सभेत उद्दालक ऋषीने उपस्थित विद्वानांना यज्ञाशी संबंधित खालील तीन प्रश्न विचारले होते-

१) यज्ञाचा आत्मा काय आहे ?

२) यज्ञाचा प्राण काय आहे ?

३) यज्ञाचे सार काय आहे ?

ह्या सर्व प्रश्नांची उत्तरे तेथील विद्वानांना देता आली नाहीत. तेव्हा उद्दालक ऋषींनीच त्यांची उत्तरे दिली.

१)'स्वाहा वाङ्वै यज्ञस्यात्मा ।'

ही जी स्वाहा वाणी (बोलणे) आहे, तीच यज्ञाचा आत्मा आहे, दुसऱ्यांच्या हितासाठी आपल्या स्वार्थाचा त्याग करणे, आपले धन, शक्ती, ज्ञान, विचार व जीवन जगाच्या कल्याणासाठी अर्पण करणे, हाच स्वाहा शब्दाचा भाव आहे.

२) इदं न मम वै यज्ञस्य प्राणः ।
हे माझे नाही, हा भाव यज्ञाचा प्राण आहे. आणि

३) सुरभिर्वै यज्ञस्य सारः ।-
सुगंध हे यज्ञाचे सार आहे, सारभूत तत्व आहे.

देण्या घेण्याचे यज्ञाची सिद्धता

यज्ञाच्या मुळाशी वरील पहिल्या प्रश्नाच्या उत्तरात दर्शविलेली **स्वाहा**ची भावना आहे. देवपूजा, संगतिकरण आणि दान ह्या यज्ञाच्या तीन अर्थामधील दानाचे स्वरूप **स्वाहा** शब्दाच्या स्पष्टीकरणात दर्शविले आहे. जड-चेतन सृष्टीतील कोणतेही कर्म दानाशिवाय पूर्ण होत नाही. जेथे देणार आहे, तेथे घेणाराही आहेच. हा जो देणारा (देव) आहे, तो कांहीतरी देत असतो. त्या बदल्यात घेणारा त्यास कांहीतरी अर्पण करून त्याची पूजा करीत असतो. देण्या-घेण्याचा हा परस्पर व्यवहार कसा झाला पाहिजे ? हे शिकविणाऱ्या अग्निहोत्रादी रूपकांचे नाव यज्ञ आहे. हे रूपक वास्तविक यज्ञाचा अभ्यास करावयास लावते.

देणारा आहे पण घेणारा नाही, किंवा घेणारा आहे पण देणारा नाही , असे होत नाही. म्हणजे यज्ञकर्म (सर्वांच्या कल्याणाचे प्रत्येक श्रेष्ठतम कर्म) हे एकटा देणारा असूनही पूर्ण होत नाही किंवा एकटा घेणारा असूनही पूर्ण होत नाही. अर्थात यज्ञाच्या सिद्धतेसाठी दोघांचीही आवश्यकता असते. श्रीमद्भगवद्गीतेच्या समर्पण-भाष्यात स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती (पूर्वाश्रमीचे पं. बुद्धदेव विद्यालंकार) ह्यांनी गीतेतील निष्काम कर्मयोगाच्या संदर्भात असलेल्या यज्ञविषयक श्लोकांचे मार्मिक विवेचन केले आहे.

देवलोक-म्हणजे देणारे लोक

गीतेच्या नवव्या अध्यायातील **त्रैविद्या मां सोमपा..** ह्या विसाव्या श्लोकाचे विवेचन समर्पणभाष्यात पुढीलप्रमाणे केले आहे.-

द्यौ म्हणजे देवलोक अर्थात लोक ! देणाऱ्याच्या कर्तव्याचे व अधिकाराचे क्षेत्र ! ज्याप्रमाणे एखाद्या कुटुंबात आई, वडील आणि मुले परस्परांना प्रेम, जिव्हाळा, सुख, समाधान इ. कांहीना काही देत असतात, तेवढ्या अंशाने तशा अर्थाने ते देव आहेत. गर्भस्थ बालक किंवा वर्षा-दोन वर्षाचे मूलसुद्धा आपल्या आई-वडिलांस एक प्रकारची प्रफुल्लता देते, प्रफुल्लतेचे दान देते. त्यास त्यांना अपत्यसुख देते. तेवढ्या अंशाने ते देवच असते. त्या बदल्यात त्याच्या देवपणाच्या अंशास टिकविण्याकरिता आई-वडील जे प्रयत्न करतात, तीच देवपूजा होय. अशा अर्थाने जेथे एकापेक्षा अधिक देव एकत्र येऊन एक दुसऱ्यांना कांहीतरी देत-घेत असतात, त्याचेच नाव यज्ञ आहे. हाच कुटुंबरूपी एक छोटासा देवलोक /सुरलोक होय.

सात्विक दान हेच श्रेष्ठ दान

गीतेत दानाचे तीन प्रकार सांगितले आहेत, ते असे-

दातव्यमिति यद्दानं दीयतेऽनुपकारिणे ।
देशे काले च पात्रे च तद्दानं सात्विकं स्मृतम् ॥ (१७.२०)

कोणी आपल्यावर उपकार केले असतील, तर त्या उपकाराच्या परतफेडीची भावना मनात न आणता केलेले दान, व्याकूळ जीवांना पिण्यासाठी थंड पाणी उपलब्ध करून देणे, एखाद्या साथीच्या रोगाने प्राणी मरत असतील तर योग्य औषधांचा पुरवठा करणे, एखाद्याचे जीवन परोपकारमय आहे, अशा पात्र व्यक्तीस विचारपूर्वक दान देणे इ. ही सर्व सात्विक दानांची उदाहरणे आहेत.

वरील विवेचन लक्षात घेता क्रांतिकारकांनी देशाला स्वातंत्र्य मिळवून देण्यासाठी केलेले बलिदान हे सात्विक प्राणदान आहे. संत एकनाथांनी तापलेल्या वाळूवर तडफडणाऱ्या गाढवास गंगाजल पाजले, नेताजींच्या स्वातंत्र्यकार्यासाठी युद्धात वीरगतीस पावलेल्या एका सैनिकाच्या मातेने मुलाच्या फोटोची सोन्याची फ्रेम दान दिली, भामाशाहाने राणाप्रतापांच्या कार्यासाठी आपली थैली मोकळी केली, हे सर्व सात्विक दानाची उदाहरणे आहेत.

मार्च, २००७ मध्ये मुंबईतील आर्यसमाज सान्ताक्रुज येथे पार पडलेल्या पुरोहित संमेलनात अमेठीचे प्रख्यात पंडित व वैदिक प्रवक्ते डॉ. ज्वलन्तकुमार शास्त्री ह्यांनी सात्विक दानाची खालील प्रमाणे एक मार्मिक घटना सांगितली.

पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय ह्यांच्या धर्मपत्नी श्रीमती कलादेवीजींनी आपल्या पतींना न विचारता आपल्या हातांतील

सोन्याच्या बांगड्या आर्यसमाज प्रयागच्या इमारतीचे छत टाकण्यासाठी दान दिल्या. त्या बांगड्या त्यांना त्यांच्या सासूने भेट दिलेल्या होत्या. ही गोष्ट त्यांनी पतीला सांगितल्यास पं. गंगाप्रसादजींनी म्हटले- तुमचे हात सोन्याच्या बांगड्यांनी जितके शोभून दिसत होते, त्यापेक्षा ते आता दान दिल्यामुळे अधिक शोभून दिसतील.

हस्तस्य भूषणं दानं ।

अर्थात् हाताचे भूषण (अलंकार, दागिना, शोभा) दान आहे, हे एका संस्कृत सुभाषितकारांने म्हटले आहे ते सार्थच आहे, सारांश असा की, **दान देणे हा मानवधर्म आहे**, या सद्‌बुद्धीने जे दान दिले जाते, ते **सात्त्विक दान** होय, तेच सत्पात्री व निःस्वार्थी दान असते.

२) जे दान उपकाराची परतफेड म्हणून मोठ्या कष्टाने दिले जाते, ते **राजस दान** होय. (१७.२१)

३) आणि जे दान अयोग्यस्थानी, अवेळी, अपात्री, अपमानपूर्वक दिले जाते, ते **तामसदान** म्हणविले जाते (१७.२२)

राजस आणि तामसदानांचा हेतू पवित्र नसल्यामुळे ती उपकारक नाहीत. स्वामी श्रद्धानंदजींना गुरूकुल कांगडीसाठी आवश्यक असलेली जमीन मुंशी अमनसिंगांनी दिली. स्वामी श्रद्धानंदांनी आपली सर्व सम्पत्ती गुरूकुलास दान केली. लंडनच्या स्व.शान्तिदेवी मायर यांनी परळी येथील श्रद्धानंद गुरूकुलास विविध कार्यासाठी ४९ लाख रूपयांचा निधी दिला. एम.डी.एच.मसाले प्रा.लि.दिल्लीचे अध्यक्ष प्रसिद्ध उद्योगपती महाशय धर्मपालजींनी देशातील वेगवेगळ्या प्रांतातील अनेक संस्थांना केवळ लाखांच्या नव्हे तर कोटींच्या संख्येत दान दिले आहे. गेल्या वर्षी परळी गुरूकुलात वानप्रस्थाश्रम भवन उभारण्यासाठी त्यांनी २० लाखाचा निधी दिला आहे. आर्य चॅरिटेबल ट्रस्ट, नागपूरचे अध्यक्ष श्री राव हरिश्चंद्रजी आर्य हेही आपले नाव सार्थ करणारे असेच एक दानशूर महात्मा आहेत. अशी ही सात्विक दानांची नाममालिका न संपणारी आहे.

हे धन कोणाचे आहे ?

यजुर्वेदाच्या ४० व्याअध्यायातील पहिल्या मंत्रात म्हंटले आहे-

तेन त्यक्तेन भुंजीथाः
मा गृधः कस्य स्वीद्धनम् ॥

हे धन कोणाचे आहे ? हे धन परमेश्वराचे आहे. त्याचा लोभ धरू नकोस. या धनाचा त्यागपूर्वक उपभोग घे.

ऋग्वेद १०/११७/६ मध्ये म्हटले आहे- **केवलाघो भवति केवलादी ।** जो एकटा भोजन करतो, तो नुसते पापच खातो. गीतेत याचेच वर्णन आढळते - **भुंजते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात् ॥** (३-

१३)म्हणजे जो फक्त आपल्यासाठीच अन्न शिजवितो तो केवळ पापाचा हंडा शिजवितो. एवढेच नव्हे त कृतज्ञ बुद्धी न बाळगणाऱ्यास, त्याग परोपकारादी न करणाऱ्यास गीतेने चोर, डाकू म्हटले आहे -

इष्टान्भोगान्हि वो देवा दास्यन्ते यज्ञभाविता । तैर्दत्तानप्रदायैभ्यो यो भुङ्क्ते स्तेन एव सः ॥ (३.१२)

लोकल्याणाचा भावनेने संघटित होऊन पूजा केलेले देव तुम्हांस अभीष्ट योग प्रदान करतील. त्या बदल्यात त्यांना कांही दिल्याशिवाय, जो त्यांचा उपभोग घेतो, त्यास डाकू समजावे.

स्वामी समर्पणानंदांनी या श्लोकाच्या विवेचनात व्यवहारातील दोन उदाहरणे दिली आहेत. धरतीपासून आपण अन्न घेतो. त्याबद्दल तिला जोपर्यंत खत, पाणी इ. काही देत नाहीत, तोपर्यंत आपण तिच्यावर दरोडा टाकत असतो. तसेच गुरूपासून विद्या शिकून घेऊन त्याची सेवा न करणे, धन व वस्त्रादींनी त्याचा सत्कार न करणे हा सुद्धा एक दरोडाच आहे.

वेदातील साम्यवाद

वेद, उपनिषदे, गीतादी ग्रंथांनी दानाची अनेक वेळा अनेक प्रकारे महती गायिली आहे. अन्न धान्यादींचा एकट्याने उपभोग घेऊ नये, याचा अर्थ ते सर्वांना विभागून द्यावे. ज्यांच्याजवळ भरपूर संपत्ती (धन-धान्य, भूमी इ.) आहे, त्यांनी ती गरजू लोकांना स्वेच्छेने दिली पाहिजे. **अभावग्रस्तांचे भरण-पोषण करणारे व्हा,** असे म्हटले आहे. विनोबाजींचे भू-दान आंदोलन याच तत्वावर आधारलेले होते.

यजुर्वेद (३०.४) मध्ये, **सर्वांच्या सुखासाठी आश्चर्यकारक धन विभागून देणाऱ्या परमेश्वराची आम्ही स्तुती करतो,** असे म्हंटले आहे.

विभक्तारं हवामहे वसोश्चित्रस्य राधसः । अथर्ववेदाने (३/२४/५/) शंभर हातांनी गोळा करा (कमवा) आणि हजार हातांनी दान करा, असा आदेश दिला आहे.

शतहस्त समाहर सहस्त्रहस्त संकिर

याप्रमाणे समाजाच्या सर्वांगिण प्रगतीसाठी, समाजातील आर्थिक विषमता दूर करण्यासाठी, अज्ञान, अन्याय व अभाव मिटविण्यासाठी वेदातील हे साम्यवादाचे तत्व अंगिकारणे आवश्यक आहे. म्हणूनच दान हे श्रद्धेने द्यावे, अश्रद्धेनेही द्यावे, वाढलेल्या संपत्तीतून द्यावे, संपत्ती नाही वाढली तरी द्यावे, लोकलाजेस्तव द्यावे, भीतीने द्यावे, प्रेमाने द्यावे असे म्हटले आहे. **श्रद्धया देयम् । अश्रद्धया देयम । धिया देयम् । हिया देयम् । भिया देयम् । संविदा देयम् ।**

केवळ यज्ञशेषाचा अधिकार

दान या शब्दात तप, त्याग,

सेवा, परोपकार, समर्पण, साधना इ. गोष्टींचा अंतर्भाव होतो. याचे स्पष्टीकरण गीतेत याप्रमाणे केले आहे-

द्रव्ययज्ञास्तपोयज्ञायोगयज्ञास्तथापरे स्वाध्यायज्ञानयज्ञाश्च यतयः संशितव्रताः ॥ (४.२८)

कांही लोक घृत-पुरोडाशादी द्रव्यांनी यज्ञरूपक असलेले अग्निहोत्र पौर्णमासादी द्रव्ययज्ञ करणारे आहेत. अर्थात ईश्वरार्पण बुद्धीने लोकसेवेत द्रव्य लावणारे आहेत. कांही लोककल्याणार्थ तपोमय साधनेत प्रवृत्त होऊन तपोयज्ञ करणारे आहेत. कांही अष्टांगयोग साधनेद्वारे योगयज्ञ करणारे आहेत.तर कांही स्वाध्यायाच्या माध्यमातून ज्ञानयज्ञ करणारे, खडतर व्रत धारण करणारे आहेत.

सर्व प्रकारच्या यज्ञामध्ये **इदं न मम।** (हे माझे नाही) ही त्यागाची, समर्पणाची, दानाची भावना सूत्ररूपात व्यापलेली आहे. **हे माझे नाही, हे माझे नाही,** असे म्हणत-म्हणत शेवटी मनुष्याजवळ प्रभकृपेशिवाय कांहीच शिल्लक राहत नाही. ही प्रभुकृपा म्हणजेच यज्ञशेष होय. यालाच अमृत म्हटले आहे. अशा अनासक्त भक्तिद्वारे यज्ञ करणारे लोक या इहलोकास सुखमय बनवतात. त्यामुळे त्यांचा परलोकही स्वतःच सुखमय बनतो.

सामवेदाने ही यज्ञशेषाची भावना अधिक स्पष्ट केली आहे. विभागून द्यायचे धन मी एकट्याने न उपभोगता पंचमहायज्ञांमध्ये त्याचा विनियोग करून राहिलेल्या धनाचा (यज्ञशेषाचा) मी उपभोग घ्यावा. अर्थात परोपकारादी सत्कर्मांसाठी खर्च होऊन राहिलेल्या शेष (शिल्लक) धनाचाच उपभोग घेण्याचा मला अधिकार आहे. यालाच यज्ञशेष खाणे असे म्हटले आहे.

यज्ञातून उरलेले अन्न खाणाऱ्यांना (यज्ञशेष खाणाऱ्यांना) पाप सोडून जाते, असे गीतेत (३.१३) म्हटले आहे. याचे स्पष्टीकरण गीतेत (४.३७) याप्रमाणे केले आहे -

हे अर्जुना ! ज्याप्रमाणे प्रदीप्त अग्नी इंधनास (घृत, सामुग्री, समिधा इ.) राख बनवितो, त्याचप्रमाणे यज्ञासाठी (मानवसमाजाच्या सामूहिक हितासाठी) केलेले निष्काम समर्पण सर्व पापकर्मांस भस्म करून टाकते. (जेव्हा लोकहिताची भावना स्वार्थभावनेस भस्म करून टाकते, तेव्हा आपोआपच पापकर्माचे मूळ कापले जाते.)

नियतशृंखलेत दानाचे महत्व

प्रत्येक मोठ्या यज्ञाची कार्यशृंखला, दुसऱ्या लहान यज्ञांचे मोठ्या यज्ञाकरिता केलेले दान हे समर्पण आहे. उदरभरण यज्ञात खाल्लेले अन्न रस-रक्तादी बनून सर्व शरीरभर फिरते. ही शृंखला तुटल्यास शरीरयंत्र सुरळीत चालत नाही. याप्रमाणेच व्यक्तीचे

बलिदान कुटुंबासाठी, कुटुंबाचे बलिदान राष्ट्रासाठी व राष्ट्राचे बलिदान विश्वासाठी होणे आवश्यक आहे. यामुळे सर्वांचेच कल्याण होते. याउलट विश्वाला राष्ट्रासाठी, राष्ट्राला कुटुंबासाठी व कुटुंबाला व्यक्तीसाठी बलिदान करावे लागले, तर इष्टसिद्धी होत नाही.

(हे सर्व विवेचन गीतेच्या समर्पणभाष्यात फार चांगल्या प्रकारे केले आहे.)

-सुरभारती स्वाध्याय केंद्रे,
सीताराम नगर, लातूर ९६२३८४२२४०

देशात सुंस्कारांची जडण घडण होण्याच्या व वैदिक सोळा संस्कार आणि विशुद्ध यज्ञ संस्कृतीचा प्रसार व प्रचार करण्याच्या पवित्र उद्देशाने महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेचा वार्षिक उपक्रम

* राज्यस्तरीय पुरोहित प्रशिक्षण शिबिर *

-: दिनांक २७ जून ते ६ जुलै २०१४ :-

स्थळ - श्रद्धानंद गुरूकुल आश्रम, परळी-वैजनाथ जि.बीड

प्रमुख प्रशिक्षक - प्रो.डॉ. दीनदयाळजी वेदालंकार

अधिव्याख्यातें, वेदविभाग, गुरूकुल कांगडी विश्वविद्यालय, हरिद्वार)

- अन्य मार्गदर्शक -

पं.सुधाकरजी शास्त्री (सभा उपदेशक) **पं.प्रतापसिंहजी चौहान** (सभा भजनोपदेशक)

आज समाजात वैदिक १६ संस्कारांची परंपरा रूजविणे अत्यंत गरजेचे आहे. आपण एक कुशल व उत्तम पुरोहित बनून परोपकाराचे व राष्ट्र संस्कृती रक्षणाचे हे पवित्र कार्य करू शकता ! तरी या शिबिरात आपण अवश्य सहभागी व्हावी.

प्रवेश शुल्क रू. १०० फक्त

या संदर्भात विस्तृत माहितीपत्रे आर्य समाजांना पाठविण्यात येत आहेत.

-विनीत -

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभा, परळी-वै.

पं. लेखराम उपदेशक महाविद्यालय में निःशुल्क प्रवेश

आर्य समाज परली द्वारा संचालित गुरूकुल आश्रम नंदागौळ मार्ग, परली में प्रांतीय सभा द्वारा 'पं. लेखराम उपदेशक महाविद्यालय' कार्यरत है। इसमें न्यूनतः ९ वी उत्तीर्ण छात्रों को प्रवेश दिया जाएगा। इस संस्था का तीन वर्षो का पाठ्यक्रम है, जिसमें विद्यार्थियों को वैदिक सिद्धांतों का प्रशिक्षण दिया जाता है। भविष्य में वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार हेतु उपदेशक, व्याख्याता, भजनोपदेशक, पुरोहित आदि तैयार करना यह इस महाविद्यालय का उद्देश्य है। प्रत्येक वर्ष पांच छात्रों को इस महाविद्यालय में निःशुल्क प्रवेश दिया जाता है। भोजन, निवास तथा शिक्षा भी निःशुल्क होती है।

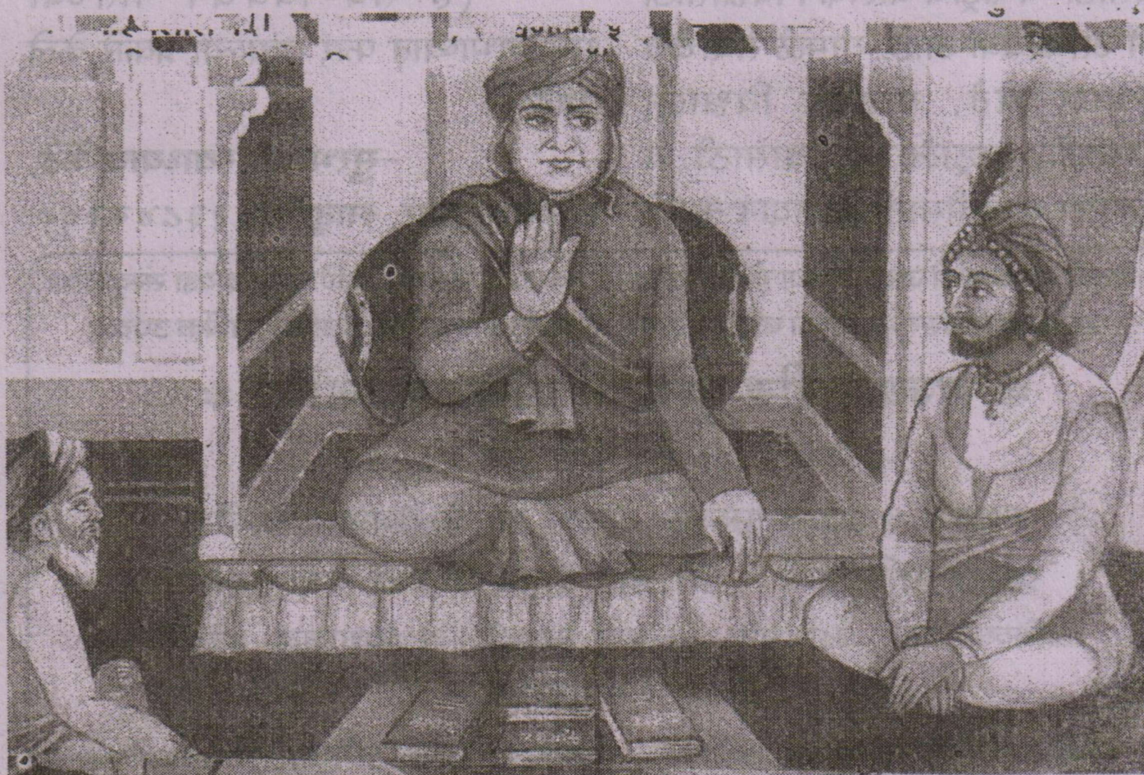

उदयपुरच्या राजास उपदेश

त्याकाळी मेवाडच्या गादीवर युवक राजकुमार सज्जनसिंह विराजमान झाले होते. त्यांच्या आग्रहाचा स्वीकार करून स्वामीजींनी खास आपली मुंबई यात्रा मध्येच थांबविली व ते उदयपुरला आले. येथील नवलखा राजमहालात त्यांची राहाण्याची व्यवस्था केली गेली. राजस्थान राज्यात येऊन एतद्देशीय राजांचे प्रबोधन करणे, अशा प्रकारचा स्वामीजींचा पूर्वनिर्धारित कार्यक्रम होता. क्षत्रिय कुळात जन्मलेल्या या राजांमध्ये स्वधर्म, स्वभाषा आणि आपली संस्कृती व तसेच आपल्या गौरवशाली श्रेष्ठ परंपरांविषयी स्नेह व आपुलकीची भावना जागविण्याच्या कामी ते जर यशस्वी ठरले , तर आपणांस देश सुधारण्याचे कार्य करणे अधिक सोपे जाईल, अशी स्वामीजींना खात्रर होती. **यथा राजा तथा प्रजा** या सूक्तीनुसार जर शासकवर्गात सुधारणा झाली, तर प्रजेलाही सरळ मार्गावर आणण्यास वेळ लागणार नाही. युवा महाराजा हे तर खूपच लवकर स्वामीजींच्या प्रेम व भक्तीस पात्र बनले. त्यांनी स्वामीजींकडून नियमितपणे

शास्त्रांचा अभ्यास करण्यास सुरूवात केली. याच शृंखलेत स्वामीजींनी त्यांना मनुस्मृती ग्रंथातील राजनीती, राज्य प्रशासन, न्यायव्यवस्था, युद्धनीती व तसेच प्रजापालनाशी संबंधीत अध्याय शिकविले. या व्यतिरिक्त योग, वैशेषिक या दर्शनशास्त्रांचा कांही भाग ही शिकविला. व्याकरण विषयाचे ज्ञान तर महाराजांना चांगल्या प्रकारे झालेच होते. त्यामुळे ते रामायण, महाभारत इत्यादी महाकाव्यातील श्लोकांचे अर्थ स्वतःच करू लागले. महाराजांच्या जीवनात आणखी सर्वात मोठा बदल घडून आला , तो म्हणजे वेश्याचे नाच-गाणे व मद्यप्राशनासारख्या दुर्व्यसनांपासून सुटका ! यामुळे ते यापुढे आपला सारा वेळ प्रजापालनाच्या कार्यासाठी देऊ लागले. स्वामीजींनी महाराजांना एक विशिष्ट दिनक्रम लिहून दिला आणि त्याचे काटेकोरपणे पालन करण्यास सांगितले. महाराजा हे सुद्धा स्वामीजींना अगदी श्रेष्ठ गुरू प्रमाणे आदर देत असत. स्वामीजींनी प्रशासनाला गतिमान करण्याचे व लोकांमध्ये शिक्षणाचा प्रचार करण्याचे मौलिक उपाय राजांना सांगितले. महाराजांच्या दरबारातील कर्मचारी व मंत्रीगण हे सुद्धा स्वामीजींनी सांगितलेल्या मार्गावरून चालण्यास प्रवृत्त झाले. पं. मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या, कविराज श्यामलदास, बारहट कृष्णसिंह इत्यांदींनी स्वामी दयानंदांचे शिष्यत्व पत्करले.

('दयानंद चित्रावली'चा मराठी अनुवाद)

-३/५, शंकर कॉलनी, श्रीगंगानगर (राज.)

॥ ओ३म् ॥

आर्य वानप्रस्थ आश्रम, परली

आयु के ५०-६० वर्ष बिता चुके तथा गृहस्थाश्रम की जिम्मेदारियों मुक्त, अपनी शासकीय व अशासकीय नोकरियों से सेवानिवृत्त हो चुके तथा सांसारिक मोहबन्धनों से ऊब चुके सज्जन महानुभावों, दम्पतियों के लिए स्वास्थ्य रक्षा, सेवा, स्वाध्याय, आध्यात्मिक साधना हेतु आर्य वानप्रस्थ आश्रम, परली वैजनाथ जि बीड-(महा.) में पूरी व्यवस्था है। वे यहां पर आकर ठहर सकते हैं।

साथ ही अपनी सेवाओं में कार्यरत व्यक्ति, व्यापारी लोग भी वर्ष में एक या दो बार आकर दस - पन्द्रह तक रह सकते हैं। यहांपर प्राकृतिक व आयुर्वेदिक चिकित्सा, ध्यान धारणा केंद्र, वैदिक ग्रन्थालय आदि द्वारा स्वास्थ रक्षा योग-साधना, स्वाध्याय-चिंतन का लाभ उठा सकते हैं। सभी सज्जनों का स्वागत हैं !

- व्यवस्थापक

आर्य स्वा.सै.मारुतीराव सुरावार यांचा गौरव सोहळा

शहापुर ता.देगलूर जि.नांदेड येथील वयोवद्ध आर्य कार्यकर्ते स्वा.सै.श्री मारुतीराव नरसिंगराव सुरावार यांच्या वयास ८६ वर्ष पूर्ण झाल्याच्या निमित्ताने **त्यांचा विशेष गौरव समारंभ** नुकताच नांदेड येथे विविध मान्यवरांच्या उपस्थितीत पार पडला. प्रा.डॉ.नयनकुमार आचार्य यांच्या पौराहित्याखाली सकाळी पार पडलेल्या **आयुष्कामेष्टी यज्ञात** श्री सुरावार व सौ.शारदाबाई या मुख्य यजमानांसोबतच सुपुत्र श्री धोंडिबा व सौ.हेमलता तसेच कन्या सौ.सविता व श्री नरेंद्र, सौ.अनिता व श्री सुरेंद्र, सौ.चंद्रकला व श्री निवृत्तीराव हे यजमान यज्ञात सहभागी झाले. याप्रसंगी नांदेड आर्य समाजाच्या प्रधान डॉ.सौ.शारदादेवी तुंगार, मंत्री श्री नारायणराव कुलकर्णी, कोषाध्यक्ष श्री यादवराव भांगे, ज्येष्ठ पत्रकार प्राचार्य देवदत्त तुंगार, शहापुरचे आर्य कार्यकर्ते श्री हनुमानलू पुल्लागोर आदींनी स्वा.सै.सुरावार यांचा सत्कार करुन आपल्या मनोगतांद्वारे दीर्घायुष्य चिंतीले.

संक्षिप्त परिचय-

श्री मारुतीराव सुरावार हे शहापुरच्या १६ स्वातंत्र्य सैनिकांपैकी एक आहेत. हैद्राबाद संग्रामात भूमिगत राहुन त्यांनी अनेक ठिकाणी क्रांतिकारी कार्य केले. देगलुरचे आर्य समाजी स्वा.सै.पोशट्टीदादा उनग्रतवार यांच्या प्रयत्नाने तत्कालीन आर्य विद्वान पं.लक्ष्मणराव गोजे यांच्या पौरोहित्याखाली श्री सुरावारजींचा विवाह वैदिक पद्धतीने संपन्न झाला होता. विवाहप्रसंगीच्या आदर्श व्याख्या ऐकून श्री सुरावार प्रभावित झाले, तेंव्हापासून ते आर्य विचारांकडे आकर्षित झाले व एक कट्टर आर्य समाजी बनले. त्यांच्या आर्य व्यक्तिमत्वाचा नावलौकिक परिसरात आजही दिसून येतो. विनोबा भावेंच्या भूदान चळवळीत देखील त्यांनी सहभाग घेतला. एकत्र कुटुंब पद्धतीचा अवलंब करुन ते आपल्या कुटुंबाचे आधारस्तंभ बनले व सर्व सदस्यांना यथायोम्य न्याय दिला. शेती व दुकान सांभाळत त्यांनी गावात आपल्या सहकारी आर्य कार्यकर्त्यांसमवेत राहुन आर्य समाजाचा प्रचार व प्रसार केला. वैदिक धर्मप्रचारक पं.बन्सीलालजी व्यास यांच्या हस्ते गावात आर्य समाजाची स्थापना करण्यात ते अग्रभागी होते. या संस्थेच्या कोषाध्यक्ष व नंतर मंत्रीपदाचीही धुरा त्यांनी समर्थपणे सांभाळली. दिल्ली, हैद्राबाद, गुंजोटी येथील आर्य समाजाच्या संमेलनात त्यांनी भाग घेतला. आर्य नेते पं.नरेंद्रजी, पं.शेषरावजी वाघमारे यांच्याही ते संपर्कात आले. प्रखर आर्य विचारक दिवंगत

पं.लक्ष्मणराव आर्य (बासरे) व श्री पोशट्टीदादा उनग्रतवार यांच्या सहवासात राहुन श्री सुरावार यांनी आर्य समाजाचे प्रचार कार्य केले. ५ वर्षे ते शहापुर ग्रामपंचायत सदस्य होते. आयुर्वेद व निसर्गोपचार पद्धतीवर त्यांची अगाध निष्ठा आहे. निकोप जीवन जगतांना सर्वांना सहकार्य करण्याची त्यांची वृत्ती प्रेरणादायी आहे. आजही वयाच्या ८६ व्या वर्षी ते निरामय जीवन जगत वैदिक विचारांचा वारसा मोठ्या उत्साहाने चालवित आहेत. अशा एका निस्पृह आर्य व्यक्तिमत्त्वाचे अभिनंदन व त्यांना दीर्घायुष्य व आरोग्य लाभो, यासाठी आर्य जगतातर्फे शुभेच्छा

शिबिर वार्ता — पाच ठिकाणच्या शिबिरांना उत्तम प्रतिसाद

दरवर्षी प्रमाणे याही वर्षी महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेच्या वतीने ४ ठिकाणी **'मानवता संस्कार व आर्यवीर दल'** शिबिरांचे आयोजन करण्यात आले. तर उदगीर येथे **आर्यकन्या वैदिक संस्कार शिबिर** उत्साहात संपन्न झाले. मुला-मुलींचे जीवन वैदिक विचारांनी सुसंस्कारित होऊन त्यांच्या पवित्र अंत:करणात मानवतेचे संस्कार रुजावेत. तसेच ते शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, सामाजिक व आत्मिक दृष्टीने सशक्त व समृद्ध बनावेत. या दृष्टीकोनातून ही शिबिरे स्थानिक आर्य समाजांच्या सहकार्याने घेण्यात आली. सभेचे शिबिर प्रमुख प्रा. अर्जुनरावजी सोमवंशी यांच्या मार्गदर्शनाखाली खालील या सर्व शिबिरांमध्ये मार्गदर्शन करण्यासाठी सार्वदेशिक आर्यवीर दलाचे प्रधान प्रशिक्षक आचार्य श्री हरिसिंहजी आर्य, तात्याराव आर्य, सुभाषराव गायकवाड, श्री विज्ञानमुनिजी, सभेचे उपदेशक पं. सुधाकरराव शास्त्री, पं. प्रतापसिंह चौहान इत्यादींनी मागदर्शन केले.

१) वरवटी ता.भालकी जि.बिदर

दि.२५ एप्रिल ते ०१ मे २०१४ दरम्यान वरवटी ता.भालकी जि.बिदर येथे मुलांचे **अनिवासी संस्कार शिबिर** पार पडले. या शिबिरास कर्नाटक आर्य प्रतिनिधी सभेचे मोलाचे सहकार्य लाभले. जवळपास ६० विद्यार्थ्यांनी या शिबिरात आसन-प्राणायाम, व्यायाम-क्रीडा तसेच संध्या यज्ञ, वैदिक तत्त्वज्ञान इत्यादींचे प्रशिक्षण घेतले. हे शिबिर यशस्वी करण्यासाठी कर्नाटक सभेचे मंत्री सुभाषजी आष्टीकर, वेदप्रचारमंत्री श्री सुभाष सुत्रावे, महाराष्ट्र सभेचे प्रा.अर्जुनरावजी सोमवंशी, श्री नरसिंहराव राजोळे, व्यंकटराव शेडोळे, केशवराव शेडोळे, तसेच स्थानिक आर्य समाजाचे कार्यकर्ते व इतरांनी प्रयत्न केले. शेवटच्या दिवशी शिबिरार्थ्यांची भव्य

शोभायात्रा काढण्यात आली.

२)उमरगा जि.धाराशिव

दि.२ ते ८ मे २०१४ या कालावधीत आर्य समाज उमरगा च्या सहकार्याने स्थानिक बसवेश्वर विद्यालयाच्या प्रांगणात **अनिवासी संस्कार शिबिर** संपन्न झाले. यात जवळपास ७५ विद्यार्थ्यांनी मानवी जीवनाच्या सर्वांगिण कल्याणासाठी प्रशिक्षण घेतले. या शिबिरात सर्वश्री माधवराव माने गुरुजी, वाले गुरुजी, प्रधान श्री प्रदीपजी चालुक्य, मंत्री प्रा.डॉ.विठ्ठलराव जाधव, विज्ञानमुनिजी यांनी पूर्णवेळ देऊन हे शिबिर यशस्वी करण्यासाठी प्रयत्न केले. श्री प्रा. अरूण चव्हाण, पं.दिनकररावजी देशपांडे, डॉ.ब्रह्ममुनिजी इत्यादींनी शिबिरार्थ्यांना विविध विषयावर मार्गदर्शन केले. डॉ.कपिल महाजन यांच्या प्रमुख उपस्थितीत शिबिराचा समारोप झाला.

३) मांडवा ता.परळी-वै.

दि.०९ ते १५ मे दरम्यान परळी तालुक्यातील मौजे मांडवा येथे अनिवासी विद्यार्थी संस्कार शिबिराचे आयोजन करण्यात आले होते. सकाळी व संध्याकाळी गावातील जि.प.शाळा व काळभैरव मंदिराच्या प्रांगणात जवळपास ५० विद्यार्थी व विद्यार्थीनींना आसन-प्राणायाम, कवायती व विविध खेळांचे प्रशिक्षण देण्यात आले. तसेच विविध मान्यवरांच्या व्याख्यानांद्वारे विद्यार्थ्यांना मानवतेची शिकवण देण्यात आली. पं. लक्ष्मणराव आर्य, डॉ.नयनकुमार आचार्य, डॉ.ब्रह्ममुनिजी यांचेही मार्गदर्शन लाभले. शिबिराच्या सफलतेसाठी श्री पाटलोबा मुंडे, लक्ष्मणराव गुट्टे गुरुजी, शिवदासजी नागरगोजे आदींनी यशस्वीपणे प्रयत्न केले.

४) गुंजोटी ता.उमरगा

दि.१६ ते २२ मे २०१४ दरम्यान गुंजोटी येथे **अनिवासी मानवता संस्कार शिबिराचे** आयोजन करण्यात आले होते. यात ४० मुली व ५० मुली सहभागी झाले होते. आर्य समाज व घंटामठ संचालक मंडळातर्फे घेण्यात आलेल्या या शिबिरात सर्वश्री विज्ञानमुनीजी, रघुरामजी गायकवाड, प्रा.विठ्ठलराव जाधव, काशीनाथरावजी कदेरे, पं.दिनकररावजी देशपांडे आदींनी मार्गदर्शन केले. श्री रमेश चौधरी, बसप्पा माळगे गुरुजी, शंकरराव पाटील व इतर मान्यवर मंडळींनी हे शिबिर यशस्वी करण्यासाठी प्रयत्न केले.

५) उदगीर-आर्य कन्या संस्कार शिबिर

दि.२४ मे ते १ जून २०१४ दरम्यान आर्य समाज उदगीर, गुरूकुलीय स्नातक वर्ग व उत्साही संस्कृत

अध्यापकांच्या सहकार्याने स्थानिक अक्षरनंदन शाळेत **'आर्य कन्या वैदिक संस्कार शिबिरा'**चे अत्यंत यशस्वीपणे आयोजन करण्यात आले होते. या शिबिरात जवळपास ९० विद्यार्थीनींनी सहभाग घेऊन सर्वांगिण विकासासाठी प्रयत्न केले. या शिबिरात आचार्य हरिसिंहजी व श्री बिराजदार यांनी शारीरिक उन्नतीसाठी आसन-प्राणायाम, कवायती, कराटे, मल्लखांब आदींचे प्रशिक्षण दिले, तर सर्वश्री प्रा.डॉ.नरेंद्र शिंदे, पं.सुधाकरजी शास्त्री, प्रा.अखिलेश शर्मा, डॉ.ब्रह्ममुनिजी, प्रा.अरुण चव्हाण, डॉ.नयनकुमार आचार्य, पं. प्रियदत्तजी शास्त्री इत्यादींनी मार्गदर्शन केले. या शिबिरात सर्वश्री गोविंद बिराजदार (गुलबर्गा) वैजनाथराव हालिंगे (लातूर), भजनोपदेशक पं. सुभाषजी गायकवाड (सोलापूर), सौ. सीताबाई निरमनाळे, श्रीमती सावंतबाई यांनी पूर्णवेळ दिला तर आर्य कार्यकर्त्ता सौ. बेद्रे, सौ. कावरे, सौ. हुरदळे, सौ. शिंदे, सौ.डॉ.मदनसुरे आदिंनी हे शिबिर यशस्वी करण्यासाठी प्रयत्न केले. प्रा.श्री सोमवंशी, श्री सरसम्बे,प्रा.श्री नवटक्के व स्थानिक आर्य समाजाच्या पदाधिकाऱ्यांनी विशेष परिश्रम घेतले.

अभिनंदन वार्ता

डॉ. धर्मेंद्रजींना वेदवेदांग पुरस्कार

प्रसिद्ध वैदिक विद्वान व दिल्ली संस्कृत अकादमीचे सचिव डॉ.धर्मेद्रकुमार शास्त्री यांना मुंबई येथील सांताक्रुज आर्य समाजाच्या वतीने **'नारायणदास हासानंदनी विशिष्ट वेदांग पुरस्कारा'**ने गौरविण्यात आले. या आर्य समाजाच्या ७० व्या वार्षिक उत्सवात हा पुरस्कार वितरण सोहळा संपन्न झाला. यावेळी प्रसिद्ध आर्य विचारवंत डॉ.सत्यपाल सिंहजी (माजी पोलीस अधीक्षक, मुंबई) हे प्रमुख पाहुणे म्हणुन उपस्थित होते. तीन दिवस चाललेल्या वार्षिक उत्सव समारंभात व्याख्याने, भजनोपदेश आणि यज्ञ आदि पार पडले. सर्वश्री स्वामी वेदानंदजी सरस्वती, स्वामी डॉ.देवव्रतजी आचार्य व शिवदत्त पाण्ड्ये यांनाही गौरविण्यात आले.

स्वामी श्रद्धानंदजींना आर्यरत्न पुरस्कार

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेचे प्रधान व असंख्य नवतरुणांचे जीवन सुसंस्कारित करणारे तपस्वी व्यक्तिमत्त्व पूज्य श्री स्वामी श्रद्धानंदजी सरस्वती यांचा पुणे येथे **'आर्यरत्न जीवन गौरव'** हा पुरस्कार प्रदान करुन सत्कार करण्यात आला. पुण्यातील हिंदू स्वाभिमान प्रतिष्ठाण या संस्थेच्या वतीने गेल्या दि.१६ मार्च

२०१४ रोजी शिवजयंती उत्सव समारंभानिमित्त आयोजित विशेष कार्यक्रमात हा पुरस्कार स्वामीजींना देण्यात आला. चिंचवड-पुणे येथील रामकृष्ण मोरे सभागृहात विविध मान्यवरांच्या उपस्थितीत पार पडलेल्या या कार्यक्रमात वक्त्यांनी स्वामीजींच्या कार्याचा गौरव करुन त्यांचा **मानवतेचे महान उपासक व राष्ट्रधर्माचे प्रणेते** अशा शब्दात गौरव केला. यावेळी प्रतिष्ठाणचे अध्यक्ष कृष्णकुमार गोयल, कार्यकारी संचालक श्री धर्मवीरजी आर्य व सचिव उत्तमराव दंडिमे यांनी स्वामीजींच्या जीवन व कार्याचा परिचय करुन दिला.

महिला भूषण पुरस्कारांने डॉ.सौ. तुंगार सन्मानित

नांदेड येथील आर्य समाजाच्या प्रधान व साहित्यिक डॉ.सौ.शारदादेवी तुंगार यांना यावर्षीच्या **कुसुमताई चव्हाण महिला भूषण पुरस्काराने** गौरविण्यात आले. नांदेड येथे एका विशेष समारंभात ज्येष्ठ गांधीवादी विचारवंत व स्वा.सै.गंगाप्रसाद अग्रवाल यांच्या हस्ते डॉ.तुंगार यांना हा पुरस्कार देण्यात आला. यावेळी प्रमुख पाहुणे म्हणून स्वा.रा.ती.म.विद्यापीठाचे कुलगुरु डॉ.विद्यासागर पंडीत, प्रसिद्ध नेत्र चिकित्सक पद्मश्री डॉ.तात्याराव लहाने, राज्य महिला आयोगाच्या सदस्या सौ.आशाताई भिसे आदी मान्यवर उपस्थित होते. इतरही महिलांना विविध पुरस्कारांनी गौरविण्यात आले.

प्रा.डॉ. लोखंडे यांना पुरस्कार व गौरव

प्रसिद्ध आर्य लेखक व लातूर येथील आर्य कार्यकर्ते प्रा.डॉ.चंद्रशेखरजी लोखंडे यांना नुकताच **'स्व.नरहर कुरुंदकर साहित्य पुरस्कार'** प्रदान करण्यात आला. अंबाजोगाई येथे कुरुंदकर स्मृती साहित्य समारंभात ॲड.श्रीधर डिघोळे व प्रा.अलका तडकलकर यांच्या हस्ते या पुरस्काराचे वितरण करण्यात आले.

तसेच डॉ.लोखंडे यांच्या वयास ६५ वर्ष पूर्ण झाल्याबद्दल त्यांच्या गौरवार्थ प्रकाशित करण्यात आलेल्या अभिनंदन ग्रंथांचे प्रकाशन व गौरव समारंभ दि.०१ मे २०१४ रोजी लातूर येथील पत्रकार भवनात पार पडला. अध्यक्षस्थानी ज्येष्ठ विचारवंत व माजी खासदार डॉ.जनार्दनरावजी वाघमारे हे होते. प्रमुख पाहुणे म्हणून वैदिक विद्वान डॉ.सोमदेवजी शास्त्री (मुंबई) व महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेचे प्रधान स्वामी श्रद्धानंदजी हे उपस्थित होते. श्री शास्त्री व

स्वामीजींच्या शुभहस्ते डॉ.लोखंडे यांचा १ लाख रुपयांचा गौरवनिधी, स्मृतिचिन्ह व सन्मानपत्र देऊन सपत्नीक गौरव करण्यात आला. या गौरवनिधीत डॉ.लोखंडे यांनी स्वत:चे २५ हजार रुपये घालून एकूण सव्वालाख रुपयांचा निधी वैदिक संस्कृतीच्या प्रसारार्थ समितीकडे प्रदान केला. यावेळी वरील मान्यवरांनी डॉ.लोखंडे यांच्या जीवन व कार्याचा गौरव करुन त्यांना शुभेच्छा दिल्या. याप्रसगी मातु:श्री श्रीमती त्रिवेणीबाई रामस्वरुप लोखंडे, प्रा.डुमणे, प्रा. गुडे यांच्यासह आर्य समाजाचे विविध कार्यकर्ते उपस्थित होते.

वरील सर्व गौरवमूर्तींचे महाराष्ट्र आर्य
प्रतिनिधी सभेच्या वतीने
हार्दिक अभिनंदन!

प्रचार वार्ता

परळी आर्य समाजाचे वेदप्रचार अभियान यशस्वी

भारतीय नववर्ष व आर्य समाजाच्या स्थापना दिनानिमित्त परळी येथील आर्य समाजातर्फे दि.३० मार्च ते १एप्रिल २०१४ दरम्यान वेदप्रचार अभियान यशस्वीपणे राबविण्यात आले. तसेच रामनवमी व पारिवारिक संत्सग ही घेण्यात आले.

१) वाका येथे कार्यक्रम

दि.३० रोजी परळी परिसरातील आदर्श शेतकरी व होतकरु युवक श्री वैजनाथराव कराड यांच्या वाका येथील फार्म हाऊस वर वैदिक बृहद्‌यज्ञ, भजन संगीत व वैदिक व्याख्यान कार्यक्रम पार पडला. डॉ. नयनकुमार आचार्य पं. तानाजी शास्त्री यांच्या ब्रह्मत्वाखाली आयोजित यज्ञात श्री व सौ. कराड, श्री व सौ.सिरसाट यांनी यजमान म्हणून श्रद्धेने आहुत्या दिल्या. याप्रसंगी श्री कराड यांच्या मुला-मुलींचा उपनयन संस्कारही पड़ला. मंत्री श्री उग्रसेन राठौर व डॉ.ब्रह्ममुनिजी यांच्या हस्ते नर्सरी हाऊसचे भूमिपूजन करण्यात आले. भजनोपदेशक पं.सोगाजी घुन्नर(हदगांव) व पं.ब्रह्मनादमुनि यांनी भजनसंगीताचा कार्यक्रम सादर केला. तर सर्वश्री विज्ञानमुनिजी, राठौर, लक्ष्मणराव आर्य, पाटलोबा मुंडे, डॉ.ब्रह्ममुनिजी, श्री तिवार आदींनी मोलाचे मार्गदर्शन केले.

२) नवसंवत्सर व स्थापना दिवस

दि.३० मार्च रोजी सकाळी आर्य समाज परळी येथे स्थापना दिनानिमीत्त पं.प्रशांतकुमार शास्त्री यांच्या पौरहित्याखाली **नवसंवत्सरेष्टी यज्ञ** संपन्न झाला. यात श्री व सौ.राठौर, श्री व सौ.कावरे, श्री व सौ.लाहोटी, श्री व

सौ.लोहिया हे यजमान म्हणून सहभागी झाले. त्यानंतर मंत्री श्री राठौर यांच्या शुभहस्ते ओ३म् ध्वजारोहण करण्यात आले. तर उपस्थितांनी सामूहिक ध्वजगीताचे गायन केले. श्री घुन्नर व ब्रह्मनादमुनि यांच्या मधुर भजनानंतर डॉ.ब्रह्ममुनिजींनी **'आर्य परिवार निर्माण'** या विषयावर बहुमुल्य विचार मांडले. 'बदलत्या परिस्थितीत आर्य कार्यकर्त्यांनी आपल्या कुटुंबातील सर्व सदस्यांवर वैदिक विचारांचे बीजारोपण करुन आपले घर सैद्धांतिक दृष्ट्या विकसित करावे. शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य सांभाळुन आत्मकल्याणासाठी वेळ द्यावा. तसेच महर्षी दयानंदांनी ज्या उद्देशाने आर्य समाजाची स्थापना केली, तो उद्देश आणि त्यांचे नियम आचरण्याचा प्रयत्न करावा,' असेही श्री मुनिजींनी स्पष्ट केले. श्री राठौर यांनी प्रास्ताविक केले, तर श्री लक्ष्मणराव आर्य यांनी आभार मानले. सायंकाळी स्वामी श्रद्धानंद गुरुकुलात विद्यार्थ्यांच्या जंगी कुस्त्यांचे आयोजन केले गेले. आर्य समाजाचे प्रधान श्री रामपालजी लोहिया, मंत्री उग्रसेन राठौर यांनी विजयी मल्लांना पारितोषिकांचे वितरण केले. श्री कर्ममुनिजींच्या सहकार्याने प्रसाद वितरण करण्यात आला.

३) दत्तवाडी येथे संत्सग

दि.०१ एप्रिल रोजी परळी तालुक्यातील मौजे दत्तवाडी येथे पारिवारिक सत्संग पार पडला. महाराष्ट्र सभेच्या डिसेंबर महिन्यातील वैदिक व्याख्यानमाला अभियानास जीप वाहनाच्या माध्यमाने सहयोग देणारे वाहक श्री दत्तात्रय बालाजी गित्ते यांच्या घरी हा सत्संगाचा कार्यक्रम पार पडला. यावेळी पं.घुन्नर, पं.ब्रह्मनादमुनि, पं.लक्ष्मणराव आर्य यांनी वैदिक भजने सादर केली. डॉ.ब्रह्ममुनि यांनी **कौटुंबिक विकासाच्या दृष्टीने व शाश्वत सुखप्राप्तीसाठीचा योग्य मार्ग** या विषयावर चिंतनात्मक विचार मांडले. यावेळी श्री राठौर, विज्ञानमुनिजी, डॉ.नयनकुमार आचार्य आदींनी विचार मांडले. यज्ञात श्री गित्ते यांच्या कुटुंबातील सदस्यांनी सहभाग घेतला.

४) सारडगांवला पारिवारिक सत्संग

दि.२७ मे २०१४ रोजी सारडगांव येथील आर्य कार्यकर्ते व आदर्श शिक्षक श्री भागवतराव आघाव यांच्या घरी वैदिक सत्संगाचे आयोजन करण्यात आले. याप्रसंगी डॉ.नयनकुमार आचार्य यांच्या ब्रह्मत्वाखाली आयोजित यज्ञात सौ.जानकीबाई व श्री गणपतराव दहिफळे आणि सौ.मीराबाई व श्री भागवतराव

आघाव हे यजमान म्हणून सहभागी झाले. पं.लक्ष्मणराव आर्य यांनी वेदप्रतिपादित मानवीय मूल्यांना जीवनात आचरण्याचे आवाहन केले, तर मुख्य मार्गदर्शक डॉ.ब्रह्ममुनिजींनी आध्यात्मिक विचार मांडले. श्री मुनिजी यावेळी म्हणाले, 'ईश्वरप्राप्ती ही आत्म्याची मुख्य इच्छा आहे. सृष्टीतील संयोग व वियोग हा ईश्वरीय व्यवस्थेत अटळ आहे. परब्रह्म प्राप्तीसाठी साधन म्हणून मिळालेल्या शरीराचा सदुपयोग माणसाने नेहमी करावा. स्वास्थ्याचे रक्षण व संवर्धन करीत दररोज ध्यानधारणा, योग साधनेच्या माध्यमाने जीवन शाश्वत, सुखी व समृद्ध करण्याचा प्रयत्न करावा.' या सत्संगात सर्वश्री भीमराव महाराज, त्र्यंबक महाराज, सोपानराव आघाव, शिवदासजी व तुकाराम आघाव आदी गावकऱ्यांसह विज्ञानमुनिजी, ब्रह्ममुनिजी, श्री रंगनाथराव तिवार यांची प्रमुख उपस्थिती होती.

रामनवमी उत्साहात साजरी

वैदिक संस्कृतीचे थोर आदर्श महापुरुष श्रीराम यांच्या जयंतीनिमित्त(रामनवमी) परळी येथील आर्य समाजात महापुरुष प्रशंसन यज्ञ, भजनसंगीत व प्रवचनाचा कार्यक्रम पार पडला. पं.लक्ष्मणराव आर्य यांच्या पौरोहित्याखाली श्री व सौ.चाटे, श्री व सौ.तिवार, श्री राठौर, श्री जयपाल लाहोटी या यजमानांनी विशेष आहुत्या प्रदान केल्या. त्यानंतर श्री जयकिशोर दोडिया व पं.ब्रह्मनादमुनिजी यांनी भजने सादर केली. याप्रसंगी डॉ.ब्रह्ममुनिजी यांनी मार्गदर्शन केले. ते म्हणाले, 'श्रीरामांचे उदात्त जीवन विश्वनिर्मितीसाठी अत्यावश्यक असल्याचे प्रतिपादन केले. श्रीरामांचे संपूर्ण जीवन जगातील प्रत्येक मानवासाठी अत्यंत प्रेरणादायक असून सर्वांना शांत, सुखी व समृद्ध करण्यासाठी ते उपकारक ठरेल. दुर्दैवाने श्रीरामांना ईश्वराचा अवतार मानल्याने व नानाप्रकारच्या कल्पनात्मक कथा त्यांच्यासोबत जोडल्याने त्यांची उंची कमी करण्याचा प्रयत्न गेल्या अनेक वर्षांपासून होत आहे. त्यामुळे रामचरित्र संकुचित होत आहे. श्रीराम हे जगातील सर्वच मानवांसाठी आदर्श आहेत. अवतारवादाच्या संकल्पनेमुळे व संकुचित भावनेमुळे मात्र इतर मतपंथांचे लोक श्रीरामांच्या उदात्त जीवन कार्यापासून दुरावले गेले. आर्य समाजाच्या विद्वानांनी श्रीराम, श्रीकृष्ण इत्यादी सत्पुरुषांचे उज्ज्वल जीवनचरित्र जगातील काना-कोपऱ्यापर्यंत पोहचल्यास निश्चितच आर्य संस्कृतीचा पुनरुद्धार होईल.या अभियानाच्या सफलतेसाठी आर्य कार्यकर्त्यांनीं अथक परिश्रम घेतले.

शोक वार्ता

श्री सदाशिवराव गुट्टे यांचे देहावसान.

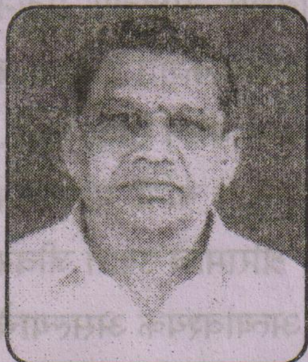

परळी येथील आर्य समाजाचे एकनिष्ठ कार्यकर्ते व कृषी विभागातील निवृत्त पर्यवेक्षक श्री सदाशिवराव पाटलोबा गुट्टे यांचे नुकतेच दि.७ जून रोजी दु.४.३० वा. अल्पश: आजाराने दु:खद निधन झाले. मृत्युसमयी ते ७५ वर्षे वयाचे होते. त्यांच्या पश्चात पत्नी सौ.सुशीलाबाई, भाऊ श्री वसंतराव, भावजय सौ.सुलोचना, २ पुतणे व नातू-नाती असा भरगच्च परिवार आहे.

श्री गुट्टे गेल्या ६ महिन्यापासून कर्करोगाने आजारी होते. त्यांच्यावर परळी, औरंगाबाद येथील तज्ज्ञ चिकित्सकांद्वारे उपचार करण्यात आले. तसेच केरळ मधील आयुर्वेदीक औषधोपचार देखील घेण्यात आले, परंतु त्यांचा आजार फारच गंभीर होत गेला व अल्पावधीतच त्यांनी आपली जीवनयात्रा संपविली. श्री सदाशिवराव गुट्टे हे आर्य समाजांच्या विचारांवर निष्ठा ठेवणारे सक्रिय कार्यकर्ते होते. आर्य भजनोपदेशक म्हणूनही त्यांची ख्याती होती. संस्थेच्या साप्ताहिक सत्संगात सहभागी होऊन ते अगदी तन्मयतेने ईश्वर भक्तीची भजने गात असत. प्रांतीय सभेच्या श्रावणी वेदप्रचार कार्यात ते प्रतिवर्षी सहभागी होत असत. देशात ठिक-ठिकाणी पार पडलेल्या आंतरराष्ट्रीय, राष्ट्रीय व राज्यस्तरीय आर्य संमेलनात त्यांनी उत्साहाने भाग घेतला होता. आपल्या प्रेमळ व मृदु सुस्वभावामुळे त्यांचे सर्वांशी स्नेहाचे नाते होते. त्यांना सामाजिकतेची जाणीव होती. अशा या वैदिक सिद्धांतावर अपार निष्ठा ठेवणाऱ्या आर्य कार्यकर्त्यांच्या अकाली निधनामुळे आर्य समाज चळवळीची हानी झाली आहे.

दिवंगत श्री गुट्टे यांच्यावर दुसऱ्या दिवशी सकाळी शोकाकुल वातावरणात शहरातील सार्वजनिक स्मशानभूमीत वैदिक पध्दतीने अंत्यसंस्कार करण्यात येणार आले. स्वामी श्रद्धानंद गुरुकुलातील श्री विज्ञानमुनिजी, अमृतमुनिजी, ब्रह्मनादमुनिजी तसेच ब्रह्मचारीवृंद, पं.प्रशांतकुमार शास्त्री व इतर पंडितांच्या आणि आर्य कार्यकर्त्यांच्या उपस्थितीत हा अंत्यविधी पार पडला. याप्रसंगी शहरातील प्रतिष्ठीत नागरिक आणि विविध क्षेत्रातील नामवंत मंडळी उपस्थित होती. सभा व आर्य समाजाच्या वतीने दिवंगत श्री गुट्टे यांनाश्रद्धांजली !

दुराचारी लोकांना सुधारले

स्वामीजींचे बोलणे ऐकताच अमीचंदावर एक प्रकारे वीजे सारखा लख्ख प्रकाश पडला. त्याने घरी जाऊन दारूच्या बाटल्या फोडून टाकल्या व माहेरी गेलेल्या पत्नीला सन्मानाने परत घरी आणले.

थिऑसॉफिकल सोसायटीशी काडीमोड

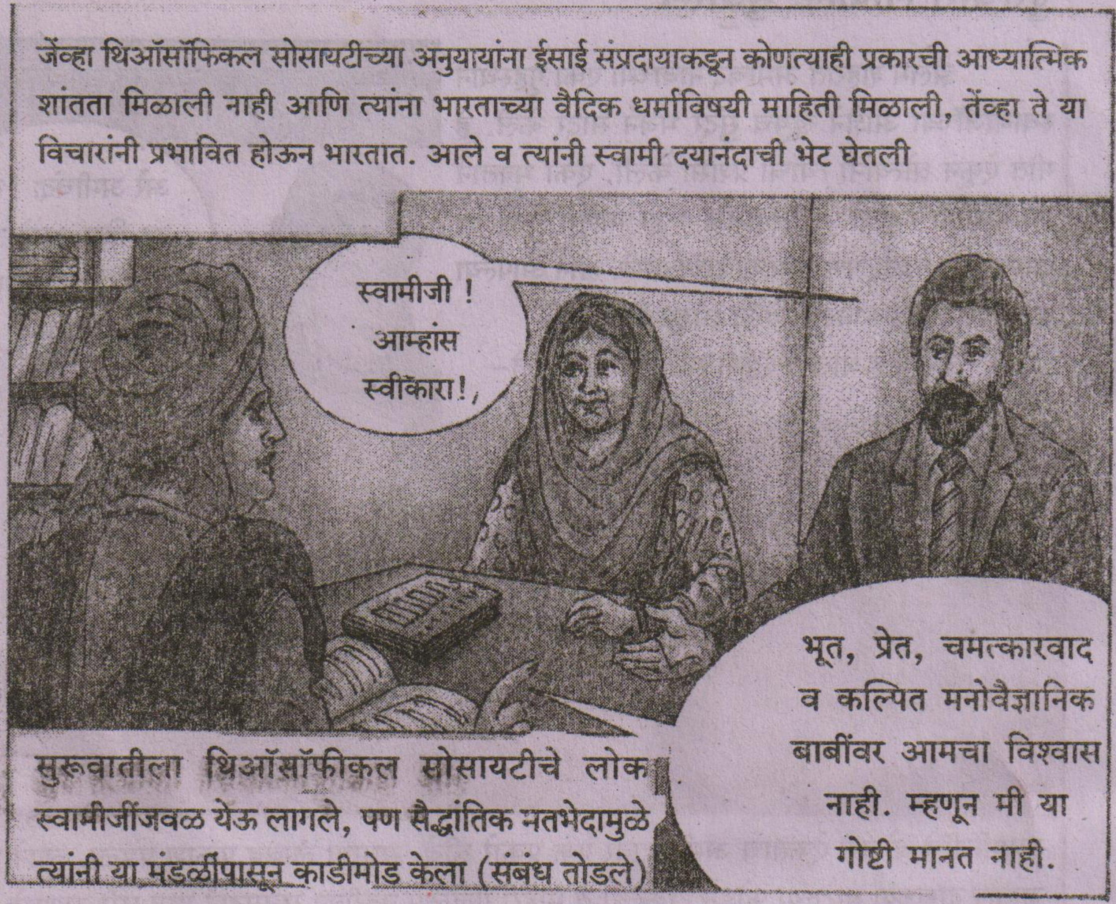

रमाबाईला संस्कृत विदुषी बनविण्यात योगदान–

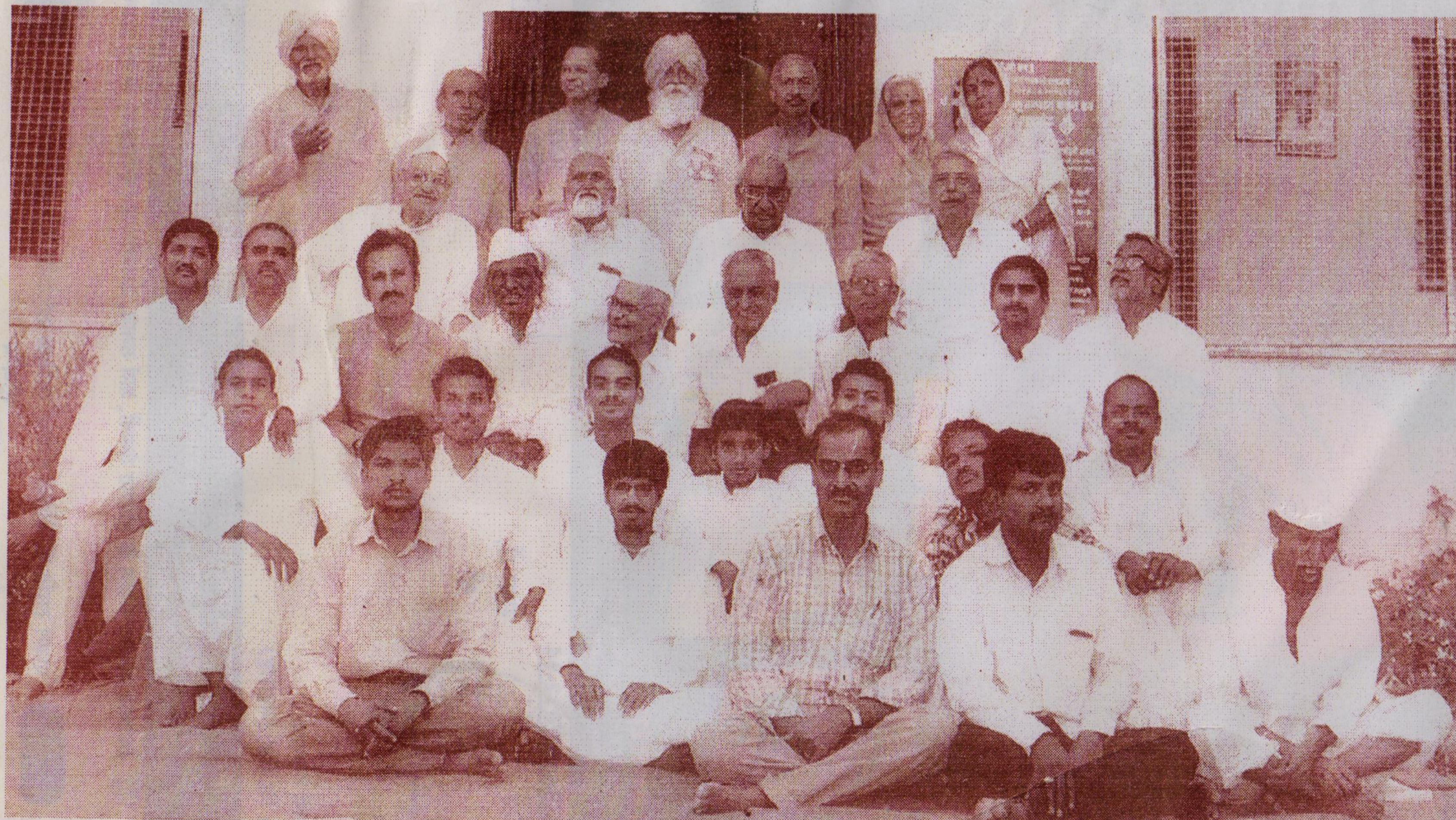

प्रसिद्ध शिक्षाविद्, विचारक, विद्वान एवं पूर्व सांसद डॉ.जनार्दनरावजी वाघमारे के साथ
आर्यसमाज परली के पदाधिकारी एवं स्वामी श्रद्धानन्द गुरूकुल आश्रम के अध्यापक, मुनिजन व ब्रह्मचारीगण।

L-2/18/RNP /16/Beed/2012-14

Reg. No. RNI No. MAHBIL/2007/7493
Postal No. L-2/18/RNP/16/Beed/2012-14

सेवा में,
श्री ______________________

प्रेषक -
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
आर्य समाज, परली वैजनाथ.
पिन ४३१ ५१५ जि.बीड. (महाराष्ट्र)

यह मासिक पत्र सम्पादक व प्रकाशक श्री मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वैदिक प्रिंटर्स, परली वैजनाथ इस स्थलपर मुद्रित कर 'महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा' कार्यालय 'आर्य समाज, परली वैजनाथ ४३१ ५१५ जि.बीड (महाराष्ट्र)' इस स्थान से प्रकाशित किया ।

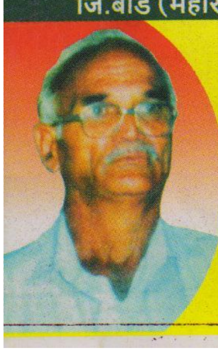

हैदराबाद स्वतंत्रता संग्राम के भूमिगत सेनानी, आर्य समाज, संभाजीनगर (औरंगाबाद) के पूर्व प्रधान

स्व.श्री नरेन्द्रसिंहजी संग्रामसिंहजी चौहान की

जन्म ३१ मार्च १९२८ — निधन १७ मार्च २०००

पावन स्मृति में 'वैदिक गर्जना' मासिक का रंगीन मुखपृष्ठ सस्नेह भेट

सौजन्य

जुगलकिशोर चुन्नीलाल दायमा	दया[illegible] राजाराम बसैये	ॲड.जोगेंद्रसिंह नरेंद्रसिंह चौहान
प्रधान	मंत्री	कोषाध्यक्ष

आर्य समाज, महर्षि दयानंद भवन, सरस्वती कालोनी, संभाजीनगर (औरंगाबाद)